मुंबई(महाराष्ट्र) से प्रकाशित

हिन्दी दैनिक

उत्तरशक्ति

मुंबई
वर्षः 7 अंक 284
बुधवार, 07 मई 2025
मूल्य 3 रुपए, पृष्ठ-6
RNI NO. MAHHIN/2018/76092
email ID- uttarshaktinews@gmail.com
www.uttarshaktinews.com

हर खबर निष्पक्षता के साथ

पाकिस्तान सीमा के पास हवाई अभ्यास करेगी भारतीय वायु सेना, भारत ने NOTAM जारी किया

नई दिल्ली, 06 मई। भारत ने भारत-पाकिस्तान सीमा के दक्षिणी हिस्से में 7 और 8 मई को होने वाले हवाई अभ्यास के लिए एयरमेन को नोटिस जारी किया है। भारतीय वायु सेना राजस्थान में अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर युद्धाभ्यास करेगी। NOTAM के अनुसार, यह अभ्यास 7 मई को दोपहर 3:30 बजे शुरू होने वाला है और 8 मई को रात 9:30 बजे तक जारी रहेगा, जिससे प्रभावित क्षेत्रों में हवाई क्षेत्र प्रतिबंधित रहेगा। यद्यपि अभ्यास का विवरण अभी तक जारी नहीं किया गया है, लेकिन NOTAM में इस अवधि के दौरान क्षेत्र में हवाई क्षेत्र के उपयोग को प्रतिबंधित करने का संकेत दिया गया है, जो भारतीय वायु सेना को शामिल करते हुए बड़े पैमाने पर सैन्य अभ्यास की तैयारी का संकेत देता है।

हवाई क्षेत्र प्रतिबंध का उद्देश्य भारतीय वायुसेना की युद्ध तैयारियों के हिस्से के रूप में लड़ाकू जेट, निगरानी विमान और अन्य हवाई अभियानों की तैनाती सहित कई गतिविधियों को सुविधाजनक बनाना है। अभ्यास का समय और स्थान महत्वपूर्ण है, क्योंकि हाल ही में सीमा पार की घटनाओं के बाद इस क्षेत्र में तनाव बढ़ गया है। हालांकि भारतीय रक्षा मंत्रालय ने अभ्यास को वर्तमान भू-राजनीतिक घटनाक्रमों से विशेष रूप से नहीं जोड़ा है, लेकिन यह अभ्यास भारत की सैन्य तत्परता का प्रदर्शन और बढ़ती क्षेत्रीय चिंताओं के बीच सतर्कता का संकेत है।

भारतीय वायुसेना अधिकारी के एक अधिकारी ने कहा कि एयरफोर्स 7 मई से भारत-पाकिस्तान सीमा पर रेगिस्तानी क्षेत्र और आस-पास के इलाकों में युद्धाभ्यास करेगी जिसमें राफेल, मिराज 2000 और सुखोई-30 सहित सभी अग्रणी फाइटर जेट शामिल होंगे। युद्धाभ्यास का समय और स्थान महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस क्षेत्र में हाल ही में सीमा पार की घटनाओं के बाद तनाव बढ़ गया है।

पुंछ में बस खाई में गिरी, जवान समेत चार यात्रियों की मौत, 44 घायल

कश्मीर, 06 मई। जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले में एक बस सड़क से उतरकर गहरी खाई में गिर गई, जिसमें चार लोगों की मौत हो गई और 44 अन्य घायल हो गए। मृतकों में एक जवान भी शामिल है। बस घनी गांव से मेंढर जा रही थी, तभी मंगलवार सुबह करीब 9:20 बजे चालक ने नियंत्रण खो दिया। स्थानीय लोगों ने तुरंत घटनास्थल पर बचाव अभियान शुरू किया और पुलिस, भारतीय सेना और सीआरपीएफ के जवानों ने उनकी मदद की। मृतकों की पहचान 45 वर्षीय मोहम्मद मजीद, 55 वर्षीय शकीला बेगम, 50 वर्षीय मोहम्मद हनीफ (तीनों घानी गांव निवासी) और 60 वर्षीय नूर हुसैन (कस्बलाड़ी निवासी) के रूप में हुई है। सेना का जवान मजीद असम में तैनात था और छुट्टी पर गांव आया हुआ था। मेंढर के ब्लॉक चिकित्सा अधिकारी अशफाक चौधरी ने कहा, दुर्घटना की सूचना मिलते ही हमने सभी 15 एम्बुलेंसों को तैनात कर दिया और पुलिस, सीआरपीएफ, सेना और स्थानीय स्वयंसेवकों की सक्रिय सहायता से घायलों को घटनास्थल से हटा दिया गया। हादसे पर शोक जताते हुए उपराज्यपाल मनोज सिन्हा और मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने प्रभावित परिवारों के प्रति संवेदना प्रकट की। मुख्यमंत्री अब्दुल्ला ने राहत कार्यों की निगरानी के लिए अपने मंत्री और मेंढर के विधायक जावेद अहमद राणा को घटनास्थल पर भेजा। पराज्यपाल मनोज सिन्हा ने हादसे पर शोक जताते हुए कहा, पुंछ में हुए इस दुखद सड़क हादसे में जान गंवाने वालों के प्रति मेरी संवेदनाएं। दुख की इस घड़ी में मेरी प्रार्थनाएं पीड़ित परिवारों के साथ हैं। घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करता हूं। जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने बस दुर्घटना पर शोक व्यक्त करते हुए कहा कि उन्होंने पीड़ितों को पूरी सहायता प्रदान करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा, ₹इस दुख की घड़ी में मैं शोक संतप्त परिवारों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूँ। मैं सभी घायलों के शीघ्र और पूर्ण स्वस्थ होने की प्रार्थना करता हूँ।

पटना में बीपीएससी अभ्यार्थियों का बवाल, सीएम हाउस के सामने छात्रों का प्रदर्शन, पुलिस ने किया लाठीचार्ज

पटना, 06 मई। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के सरकारी आवास के बाहर मंगलवार को इढरउ शिक्षक भर्ती परीक्षा 3.0 के अभ्यर्थियों ने प्रदर्शन किया। जैसे ही प्रदर्शनकारियों ने प्रतिबंधित क्षेत्र में प्रवेश किया, पुलिस ने उन पर लाठीचार्ज कर दिया। घटनास्थल से प्राप्त तस्वीरों में पुलिस महिला प्रदर्शनकारियों को सीएम आवास के आसपास के क्षेत्र से बलपूर्वक हटाती हुई दिखाई दे रही है। तस्वीरों में पुलिस कर्मियों को पुरुष प्रदर्शनकारियों पर लाठीचार्ज करते हुए भी दिखाया गया है। कुछ लोगों का आरोप है कि महिला प्रदर्शनकारियों पर भी लाठीचार्ज किया गया।

प्रदर्शनकारी बिहार लोक सेवा आयोग (BPSC) TRE 3.0 परीक्षा परिणामों में विसंगतियों के समाधान की मांग कर रहे हैं, जिसमें अभ्यर्थी रिक्त पदों और परिणामों की घोषणा में समस्याओं को लेकर चिंतित थे। प्रदर्शनकारी परीक्षा के पूरक परिणाम जारी करने की मांग कर रहे हैं। एक महिला प्रदर्शनकारी ने एएनआई से कहा, बार-बार रिक्तियां आती हैं, लेकिन सीटें खाली रहती हैं। अगर सरकार के पास पूरक परिणाम है, तो इसे जारी क्यों नहीं किया जा रहा है। बीपीएससी शिक्षक भर्ती परीक्षा 3.0 के अभ्यर्थियों ने मंगलवार को बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के आधिकारिक आवास के बाहर विरोध प्रदर्शन किया। जैसे ही प्रदर्शनकारी प्रतिबंधित क्षेत्र में दाखिल हुए, पुलिस ने उन पर लाठीचार्ज कर दिया।

आप के खिलाफ बीजेपी का प्रदर्शन

केजरीवाल और पंजाब सरकार पर लगाया दिल्ली का पानी रोकने का आरोप

नई दिल्ली, 06 मई। भाजपा नेताओं और सदस्यों ने आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल के आवास के बाहर पानी के मुद्दे पर विरोध प्रदर्शन किया। दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने कहा कि अरविंद केजरीवाल सरकार ने दिल्ली के लोगों की पानी की आपूर्ति रोक दी है। यहां की जनता ने उन्हें हरा दिया है, लेकिन अब वह दिल्ली के लोगों से बदला लेने के लिए यह सब कर रहे हैं, जो बहुत गलत है। अरविंद केजरीवाल को यह बताना चाहिए कि वह ऐसा क्यों कर रहे हैं।

भाजपा सांसद बांसुरी स्वराज ने कहा कि अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व वाली पंजाब सरकार ने दिल्ली के लोगों का पानी रोक दिया है। हम आज यहां दिल्ली के लोगों के अधिकारों की मांग करने आए हैं। भाजपा विधायक शिखा राय ने कहा कि हम यहां दिल्ली के लोगों के लिए पानी की मांग करने आए हैं, जिसे अरविंद केजरीवाल सरकार ने रोक दिया है, जो खुद को दिल्ली का बेटा कहते थे। हम दिल्ली के लोगों के अधिकार वापस चाहते हैं।

दिल्ली में भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार का दावा है कि पिछले एक हफ्ते से शहर को हरियाणा से मिलने वाली पानी की आपूर्ति में लगातार कमी आ रही है। दिल्ली के लोक निर्माण मंत्री प्रवेश वर्मा ने इस संकट के लिए आप और पंजाब सरकार को जिम्मेदार ठहराया है और आरोप लगाया है कि पानी की कमी दिल्ली विधानसभा चुनावों में पार्टी की हालिया हार का बदला लेने के लिए राजनीति से प्रेरित कदम है। वर्मा ने कहा कि पिछले एक हफ्ते से दिल्ली को हरियाणा से कम पानी मिल रहा है। यह स्थिति पंजाब सरकार और आम आदमी पार्टी की साजिश के कारण पैदा हुई है। उन्होंने कहा कि पंजाब सरकार और पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की अगुवाई वाली आप ने जानबूझकर पानी की आपूर्ति कम कर दी है। दिल्ली के जल मंत्री ने बताया कि भाखड़ा ब्यास प्रबंधन बोर्ड (बीबीएमबी) से दिल्ली को मिलने वाले पानी में 1 मई से 5 मई तक लगातार कमी आई है। उनके अनुसार, 1 मई को 88 क्यूसेक, 2 मई को 119 क्यूसेक, 3 मई को 71 क्यूसेक, 4 मई को 55 क्यूसेक और 5 मई को 130 क्यूसेक की कमी आई।

मॉक ड्रिल पर गृह मंत्रालय में उच्च स्तरीय बैठक, पीएम मोदी से मिले अजित डोभाल

नई दिल्ली, 06 मई। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए आतंकी हमले में 26 लोगों की मौत के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच बढ़े तनाव के बीच केंद्र सरकार ने 7 मई को दिल्ली, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल समेत कई राज्यों में राष्ट्रव्यापी नागरिक सुरक्षा मॉक ड्रिल की घोषणा की है। कल होने वाली राष्ट्रव्यापी ड्रिल तीन श्रेणियों में कुल 259 स्थानों पर आयोजित की जाएगी। 7 मई को देश के विभिन्न हिस्सों में हवाई हमले के सायरन बजेंगे, क्योंकि नागरिक मॉक ड्रिल में भाग लेंगे, जिसका उद्देश्य युद्ध की स्थिति में खुद को सुरक्षित रखना है।

वहीं, 7 मई को मॉक ड्रिल के आयोजन के संबंध में केंद्रीय गृह सचिव गोविंद मोहन द्वारा बुलाई गई बैठक में नागरिक सुरक्षा महानिदेशक और एनडीआरएफ महानिदेशक सहित कई उच्च पदस्थ अधिकारियों ने भाग लिया। पहलगाम आतंकवादी हमले को लेकर पाकिस्तान के साथ बढ़े तनाव के बीच हुई इस बैठक में गृह मंत्रालय के वरिष्ठतम अधिकारी द्वारा नागरिक सुरक्षा तंत्र को मजबूत करने की तैयारियों की समीक्षा किए जाने की उम्मीद थी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 22 अप्रैल को पहलगाम आतंकवादी हमले के बाद वरिष्ठ अधिकारियों के साथ कई उच्चस्तरीय बैठकों के बीच मंगलवार को राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल से मुलाकात की। गृह मंत्रालय ने सभी राज्यों से नए और जटिल खतरों से निपटने के लिए मॉक ड्रिल करने को कहा है। गृह मंत्रालय के संचार के अनुसार, मॉक ड्रिल के दौरान किए जाने वाले उपायों में हवाई हमले की चेतावनी देने वाले सायरन का संचालन, नागरिकों को शत्रुतापूर्ण हमले की स्थिति में खुद को बचाने के लिए नागरिक-रक्षा पहलुओं पर प्रशिक्षण देना और बंकरों और खाइयों की सफाई करना शामिल है।

निर्धारित मॉक ड्रिल के तहत, राज्य क्रैश-ब्लैकआउट उपायों, महत्वपूर्ण संयंत्रों और प्रतिष्ठानों को समय से पहले छिपाने से संबंधित अधिकारियों की प्रतिक्रिया को मापेंगे। वे निकासी योजनाओं का भी पूर्वाभ्यास करेंगे।

अरुणोदय सर्जिकल एण्ड ट्रामा सेन्टर

डा. अरूण आर. सिंह
कन्सल्टेन्ट लैप्रोस्कोपिक सर्जन
एस.एम.ओ.) एल.टी.एम.एम. जी. एच. (सायन हॉस्पिटल मुम्बई)
स.आर.) एम. जी.एम. मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल (नवी मुम्बई)
रजि.नं.-82945 (यू.पी.एम.सी.)

जनरल सर्जरी
स्त्री एवं प्रसूति रोग
आर्थोपेडिक (सर्जरी एवं परामर्श)
कीमोथिरैपी सुविधा उपलब्ध
न्यूरो सर्जरी (परामर्श एवं सर्जरी)

वेन्टिलेटर एवं डायलिसिस की सुविधा उपलब्ध
प्रशिक्षित डाक्टर स्टाफ तथा सभी मानकों पर खरा उतरने वाला जनपद का एक मात्र हास्पिटल
दूरबीन विधि द्वारा सभी प्रकार की सर्जरी
जनरल मेडिसिन, मधुमेह रोग

गुर्दा एवं मूत्र रोग (सर्जरी एवं परामर्श)
गैस्ट्रोइन्टरोलॉजी (इण्डोस्कोपी एवं कालोनोस्कोपी)
एक्सीडेण्टल एवं ट्रामा इमरजेन्सी
सेवा 24 घण्टे उपलब्ध

डा0 पुनीत सिंह
M.S.M.C.H.
गुर्दा एवं मूत्र रोग विशेषज्ञ (यूरो सर्जन)

डा0 रवि प्रकाश सिंह
M.S. (Ortho)
हड्डी एवं जोड़ रोग विशेषज्ञ

डा0 प्रभात सिंह
M.D.(Medicine)
कंसल्टेंट फिजिशियन

डा0 सुमित कुमार सिंह
M.D.(Neuro Psychiatrist)
मानसिक रोग विशेषज्ञ

24/7 Emergency Services

बीमा कार्ड धारकों के लिए विशेष सुविधा उपलब्ध
आयुष्मान कार्ड द्वारा निःशुल्क इलाज की सुविधाएं
8090966086,8090015086
कलीचाबाद,जौनपुर

प्रवीण सूद को मिल सकता है एक्सटेंशन, राहुल गांधी ने दिया डिसेंट नोट

नई दिल्ली। केंद्र सरकार वर्तमान सीबीआई निदेशक प्रवीण सूद के कार्यकाल को बढ़ाने पर विचार कर रही है। हालांकि, यह कदम बिना किसी विरोध के नहीं रहा, क्योंकि लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने प्रस्तावित विस्तार का विरोध करते हुए औपचारिक रूप से असहमति पत्र प्रस्तुत किया है। इससे पहले सोमवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सीबीआई निदेशक की नियुक्ति के लिए जिम्मेदार समिति की बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में राहुल गांधी और भारत के मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) संजीव खन्ना भी शामिल हुए। शाम को प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) में बैठक हुई और कई नामों पर चर्चा हुई, लेकिन सरकार ने मौजूदा निदेशक के लिए एक साल का विस्तार देने पर जोर दिया।

पहलगाम अटैक को लेकर पड़ोसी मुल्क पर भड़के ओवैसी

हैदराबाद, 06 मई। ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (एआईएमआईएम) के अध्यक्ष असदुद्दीन ओवैसी ने पाकिस्तान की कड़ी आलोचना करते हुए उसे एक विफल राष्ट्र बताया जो आतंकवाद के जहर को हवा देता है। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से सख्त कार्रवाई करने का भी आग्रह किया ताकि पाकिस्तान भारत पर दोबारा हमला करने से पहले 100 बार सोचे। ओवैसी ने एक जनसभा में कहा, हमें उम्मीद है कि प्रधानमंत्री पाकिस्तानी आतंकवादियों और पाकिस्तान के असफल राज्य के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करेंगे ताकि वह भारत को नुकसान पहुंचाने के लिए किसी को भी भेजने से पहले सौ बार सोचे। ओवैसी ने आतंकवादी हमलों, विशेषकर पहलगाम आतंकवादी हमले, जिसमें 26 लोग मारे गए थे, के बाद भारत के साक्ष्यों पर सवाल उठाने के लिए पाकिस्तान पर भी पलटवार किया। एएनआई के अनुसार कवैसी ने कहा, ₹पाकिस्तान बेशर्मी से सबूत मांग रहा है। क्या हमने आपको पठानकोट नहीं बुलाया और आपको नहीं दिखाया कि आपके आतंकवादियों ने हमारे वायुसेना अड्डे पर हमला कहाँ किया? आपने अपनी टीम भेजी, उन्होंने अपनी आँखों से देखा, फिर भी आपने उन आतंकवादियों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की। ओवैसी ने 2008 के मुंबई आतंकी हमलों का भी ज़िक्र करते हुए कहा कि 26/11 का हमला हुआ था। मैं तेलंगाना में निजामाबाद नामक एक जगह जानता हूँ।

वहाँ की हमारी एक बेटी की कुछ दिन पहले ही शादी हुई थी और वह अपने परिवार के साथ वीटी स्टेशन पर थी, जब पाकिस्तानी आतंकवादियों ने गोलीबारी की। वह भी मारी गई। उन्होंने पाकिस्तान पर आरोप लगाते हुए कहा, पाकिस्तान कभी यह स्वीकार नहीं करेगा कि उसकी धरती से आतंकवादी आते हैं और भारत में लोगों की हत्या करते हैं।

रवीन्द्रनाथ टैगोरः रोशनी जिनके साथ चलती थी

रवीन्द्रनाथ टैगोर जयन्ती-7 मई, 2025

-ललित गर्ग

भारत का राष्ट्र-गान जन गण मन और बाँग्लादेश का राष्ट्रीय गान आमार सोनार बांग्ला के रचयिता एवं भारतीय साहित्य के नोबेल पुरस्कार विजेता रवीन्द्रनाथ टैगोर की जन्म जयंती हर साल 7 मई को मनाई जाती है। वे एक महान एवं विश्वविख्यात कवि, लेखक, साहित्यकार, दार्शनिक, समाज सुधारक और चित्रकार थे। उन्हें बांग्ला साहित्य के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक चेतना में नयी जान फूँकने वाले युगदृष्टा, युगस्त्रष्टा एवं युग-निमार्ता माना जाता है। रवींद्रनाथ टैगोर को उनकी अनूठी, हृदयस्पर्शी एवं आध्यात्मिक रचनाओं के लिए लोग गुरुदेव कहकर पुकारते हैं। उनका जन्मदिन केवल जन्म का जश्न मनाने के लिए नहीं है, बल्कि उनके विचारों और मूल्यों को याद करने और उनके सद्भाव, संपूर्णता और अखंडता के आदर्शों और आकांक्षाओं के अमूल्य योगदान का सम्मान करने का भी एक अवसर है। टैगोर एक ऐसे दिव्य एवं अलौकिक व्यक्ति एवं समाजक्रांति के प्रेरक थे, रोशनी जिनके साथ चलती थी।

रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म 7 मई 1861 को कोलकाता के जोड़ासांको ठाकुरबाड़ी में हुआ। उनके पिता देवेन्द्रनाथ टैगोर और माता शारदा देवी थीं। उनकी आरम्भिक शिक्षा प्रतिष्ठित सेंट जेवियर स्कूल में हुई। उन्होंने बैरिस्टर बनने की इच्छा में 1878 में इंग्लैंड के ब्रिजटोन में पब्लिक स्कूल में नाम लिखाया फिर लन्दन विश्वविद्यालय में कानून का अध्ययन किया किन्तु 1880 में बिना डिग्री प्राप्त किए ही स्वदेश लौट आए। सन 1883 में मृणालिनी देवी के साथ उनका विवाह हुआ। टैगोर परिवार बंगाल पुनर्जागरण के समय अग्रणी था। उन्होंने साहित्यिक पत्रिकाओं का प्रकाशन किया; बंगाली और पश्चिमी शास्त्रीय संगीत एवं रंगमंच और पटकथाएं वहां नियमित रूप से प्रदर्शित हुई थीं। टैगोर के सबसे बड़े भाई द्विजेंद्रनाथ एक दार्शनिक और कवि थे एवं दूसरे भाई सत्येंद्रनाथ कुलीन और पूर्व में सभी यूरोपीय सिविल सेवा के लिए पहले भारतीय नियुक्त व्यक्ति थे। एक भाई ज्योतिरिंद्रनाथ, संगीतकार और नाटककार थे एवं इनकी बहिन स्वर्णकुमारी उपन्यासकार थीं। टैगोर ने लगभग 2,230 गीतों की रचना की। रवींद्र संगीत बाँग्ला संस्कृति का अभिन्न अंग है। टैगोर के संगीत को उनके साहित्य से अलग नहीं किया जा सकता। उनकी अधिकतर रचनाएं तो अब उनके गीतों में शामिल हो चुकी हैं। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की ध्रुवपद शैली से प्रभावित ये गीत मानवीय भावनाओं एवं संवेदनाओं के अलग-अलग रंग प्रस्तुत करते हैं। गुरुदेव टैगोर की कविताओं में हमें अस्तित्व के असीम सौन्दर्य, प्रकृति और भक्ति के दर्शन होते हैं। उनकी बहुत-सी कविताएं प्रकृति के सौन्दर्य से जुड़ी हैं। गुरुदेव ने जीवन के अंतिम दिनों में चित्र बनाना शुरू किया। इसमें युग का संशय, मोह, क्लान्ति और निराशा के स्वर प्रकट हुए हैं। मनुष्य और ईश्वर के बीच जो चिरस्थायी सम्पर्क है, उनकी रचनाओं में वह अलग-अलग रूपों में उभरकर सामने आया। टैगोर और महात्मा गाँधी के बीच राष्ट्रीयता और मानवता को लेकर हमेशा वैचारिक मतभेद रहा। जहां गांधी पहले पायदान पर राष्ट्रवाद को रखते थे, वहीं टैगोर मानवता को राष्ट्रवाद से अधिक महत्व देते थे। लेकिन दोनों एक दूसरे का बहुत अधिक सम्मान करते थे। एक समय था जब शान्ति निकेतन आर्थिक कमी से जूझ रहा था और गुरुदेव देश भर में नाटकों का मंचन करके धन संग्रह कर रहे थे, उस समय गांधीजी ने टैगोर को एक बड़ी राशि का अनुदान का चेक दिया था।

टैगोर के कई गीतों और कहानियों ने मानव चेतना को बदलने और कार्य करने के लिए साहस और प्रतिबद्धता को प्रेरित किया। उन्होंने कला का अभ्यास कला के लिए नहीं किया, न ही आत्म-अभिव्यक्ति के तरीके के रूप में और कम से कम मनोरंजन के लिए तो कत्तई नहीं किया, बल्कि उनकी कला भी नये मानव एवं नये विश्व की संरचना से प्रेरित थी। उनकी कला जीवन के गहरे अर्थ को स्पष्ट करने और आत्मा को ठीक करने की पेशकश थी। अपने शिल्प के उस्ताद के रूप में, टैगोर ने कविता की शुद्धता को जीने के उद्देश्य के साथ जोड़ा। उन्होंने न केवल अपने जीवन में मृत्यु, अवसाद और निराशा के कारण अनुभव किए गए दुख और पीड़ा को ठीक किया, बल्कि उन्होंने भारतीय समाज के भीतर अन्याय और असमानता के घावों को भरने के लिए भी काम किया। उन्होंने उन्नत कृषि, अच्छे स्कूलों, आरामदायक आर्थिक स्थितियों और बेहतर जीवन स्तर के माध्यम से मानव समुदायों के बाहरी विकास के लिए काम किया, लेकिन साथ ही उन्होंने आत्मा के नवीनीकरण, आत्मा की देखभाल, हृदय को पोषण और कल्पना को पोषित करने के माध्यम से आंतरिक विकास पर जोर दिया। वे एक ऐसे पुरुषार्थी पुरुष का महापुरुष के रूप में जाना पहचाना नाम है, जिन्होंने हर इंसान के महान् बनने का सपना संजोया और उसके लिये उनके हाथ में सुनहरे सपनों को साकार होने की जीवनशैली भी सौंपी। टैगोर गहन आध्यात्मिक एवं साधक पुरुष थे, उन्होंने अध्यात्म के गहन रहस्यों को उद्घाटित किया। उनके अनुसार मौन की भाषा शब्दों की भाषा से किसी भी रूप में कमजोर नहीं होती, बस उसे समझने वाला चाहिए। जिस प्रकार शब्दों की भाषा का शास्त्र होता है, उसी प्रकार मौन का भी भाषा विज्ञान होता है। मौन को समझा तो जा सकता है, पर समझाया नहीं जा सकता। संभवतः इसीलिए रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा था कि मौन अनंत की भाषा है। टैगोर अध्यात्म एवं विज्ञान के समन्वयक थे। टैगोर ने विज्ञान, प्रौद्योगिकी और भौतिक कल्याण के साथ आध्यात्मिक विकास की आवश्यकता व्यक्त की। एक के बिना दूसरा एक पैर पर चलने जैसा है। वे आध्यात्मिक-वैज्ञानिक व्यक्तित्व निर्माण के प्रेरक थे। इस संतुलित और समग्र विश्वदृष्टि की अब पहले से कहीं अधिक आवश्यकता है, क्योंकि यह हमारे और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्थायी और लचीले भविष्य के लिए एक अनिवार्य आवश्यकता एवं शर्त है। शुद्ध तर्क और शुद्ध भौतिकवाद उतने ही विनाशकारी हैं, जितने कि विशुद्ध रूप से व्यक्तिगत मोक्ष की खोज। टैगोर ने विज्ञान और तर्क के माध्यम से सत्य की खोज करते हुए शब्दों और कर्मों में शाश्वत ज्ञान और कालातीत मूल्यों को व्यक्त किया। टैगोर का विश्वदृष्टि तर्क और धर्म, आत्मा और पदार्थ की एकता को देखना और उन्हें एक साथ नृत्य करने देना है। यह एक बड़ी दृष्टि है जहाँ विज्ञान आध्यात्मिकता का पूरक है, कला पारिस्थितिकी का पूरक है और स्वतंत्रता समानता का पूरक है। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने हमें नस्ल, रंग, धर्म, सम्प्रदाय, भाषा और राष्ट्र की अपनी क्षुद्र पहचान से ऊपर उठने और अपनी सामान्य मानवता के साथ पहचान बनाने का आग्रह किया। उन्होंने मानवता की एकता और स्वतंत्रता, न्याय और शांति के सर्वोपरि महत्व की घोषणा करते हुए अमेरिका से रूस, चीन से अर्जेंटीना तक समूचे विश्व की अथक यात्रा की। उन्होंने अपने लाखों देशवासियों को अपने संकीर्ण स्वार्थ को त्यागने और राष्ट्रीयता, समानता, एकजुटता और नैतिकता को अपनाने के लिए अपने जातिगत पूर्वाग्रहों को दूर करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने आत्म-भोग को त्याग दिया और सामाजिक विभाजन को दूर करने के लिए अथक प्रयास किया। विशेष रूप से उन्होंने विज्ञान और अध्यात्म के बीच की खाई को भरने की कोशिश की। रबीन्द्रनाथ टैगोर प्रेरणाएं इतनी विविधमुखी थी कि उनसे जीवन का कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं रहा। चाहे वह आपसी संबंध हो, सामाजिक संबंध हो, आर्थिक संबंध हो या राजनीतिक संबंध हो- हर तरह के जीवन को उन्होंने प्रेरक बनाने का उपक्रम किया। वे कभी घटना से, कभी शब्दों से, कभी क्रिया से, कभी पत्रों से, तो कभी किसी उदाहरण या संस्मरण से व्यक्ति की चेतना को झकझोर कर आदर्श और ज्ञान के प्रति अनुराग और जोश जगाते थे। वे इस कला में निष्णात थे कि कब किसको किन शब्दों में उचित प्रेरणा दी जाए। रवीन्द्रनाथ टैगोर के पुरुषार्थी जीवन की एक पहचान थी गत्यात्मकता। वे अपने जीवन में कभी कहीं रुके नहीं, झुके नहीं। प्रतिकूलताओं के बीच भी अपने अपने लक्ष्य का चिराग सुरक्षित रखा। इसलिए उनकी हर सांस अपने दायित्वों और कर्तव्यों पर चौकसी रखती थी। खून पसीना बनकर बहता था। रातें जागती थी। दिन संवरते थे। प्रयत्न पुरुषार्थ बनते थे और संकल्प साधना में ढलते थे। यही कारण है कि आज उनके प्रयत्नों से न केवल भारतीय समाज बल्कि विश्व मानवता का जीवन प्रेरक बना है, सार्थक बना है और वे सभी उस महामानव को तहेदिल से याद करते हैं।

क्या था पूरा मामला जिसके कारण कांग्रेसी नेताओं को बार बार माफी मांगनी पड़ी है

अशोक भाटिया

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने 1984 के सिख विरोधी दंगों पर अमेरिका के ब्राउन यूनिवर्सिटी में आयोजित एक कार्यक्रम में कांग्रेस की गलतियों को स्वीकारते हुए कहा कि वे पार्टी के इतिहास में हुई हर गलती की जिम्मेदारी लेने को तैयार हैं, भले ही यह घटना उनके राजनीति में आने से पहले की हो। यह बयान उन्होंने वॉटसन इंस्टीट्यूट फॉर इंटरनेशनल एंड पब्लिक अफेयर्स में आयोजित एक सत्र के दौरान दिया, जब एक सिख युवक ने उनसे तीखे सवाल किए।सिख युवक ने राहुल गांधी से पूछा, ₹आपने कहा था कि बीजेपी राज में सिखों को कड़ा पहनने और पगड़ी बांधने से रोका जा सकता है, लेकिन कांग्रेस ने खुद भी सिखों को अभिव्यक्ति की आजादी नहीं दी। क्या आप 1984 के दंगों सज्जन कुमार जैसे नेताओं को बचाने की पार्टी की भूमिका की जिम्मेदारी लेंगे? एक युवक ने ट्वीट करते हुए लिखा, '21-04-25 को ब्राउन यूनिवर्सिटी में सिखों के लिए राहुल गांधी के मगरमच्छ के आंसू एक अपमान हैं! वह दावा करते हैं कि इखढ पगड़ी और कड़ा को खतरे में डालती है, लेकिन कांग्रेस ने इंदिरा गांधी की हत्या के बाद 1984 के सिख विरोधी दंगों को अंजाम दिया - पूरे देश में 3,350+ मारे गए, अकेले दिल्ली में 2,800 मारे गए।'युवक ने आगे लिखा, 'कांग्रेस नेता सज्जन कुमार को 2018 में दिल्ली छावनी में हुए हत्याकांड में दोषी पाया गया था। आरोप है कि कांग्रेस ने सालों तक उन्हें बचाया। कांग्रेस पर ये भी आरोप है कि वो दंगों के आरोपियों को बचाती है और सिखों की बोलने की आजादी पर हमला क राहुल गांधी ने कहा, ह्लपूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने 1984 के दंगों को लेकर सदन में अपना रुख स्पष्ट किया था और कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी भी ये कर चुकी हैं। मैं मनमोहन सिंह और सोनिया गांधी की बातों का पूरी तरह समर्थन करता हूं। मैंने भी पहले इस पर अपना रुख स्पष्ट रूप से साफ किया है। गौरतलब है कि अगस्त 2005 में पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने दंगों के लिए संसद और देश से माफी मांगी थी। उन्होंने कहा था, ह्यमुझे न केवल सिख समुदाय बल्कि देश से भी माफी मांगने में कोई हिचकिचाहट नहीं है। देश में जो कुछ हुआ, उसके लिए मैं शर्म से अपना सिर झुकाता हूं। उन्होंने आगे कहा, 1984 में जो हुआ वह हमारे संविधान में निहित राष्ट्रीयता की अवधारणा का खंडन है।ह्व उन्होंने कहा, ह्यजब 1984 की दुखद घटना घटी, उस दुखद शाम को गुजरालजी तत्कालीन गृह मंत्री पीवी नरसिम्हा राव के पास गए और उनसे कहा कि स्थिति इतनी गंभीर है कि जल्द से जल्द सेना को बुलाने की जरूरत है। अगर उस सलाह पर ध्यान दिया जाता तो शायद 1984 के दंगों को टाला जा सकता था।

1980 से घटनाओं पर ध्यान दे तो सिख अलगाववाद, एक स्वतंत्र खालिस्तान के लिए आंदोलन, भारतीय राजनीति में एक काला अध्याय है। यह एक क्लासिक और बहुत हिंसक सबक है कि क्या होता है जब धार्मिक कट्टरपंथियों को क्षणिक और अस्थायी राजनीतिक लाभ के लिए करीब लाया जाता है। इसकी परिणति पूर्व प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी की हत्या में हुई। इससे पहले, श्रीमती गांधी को इन सिख आतंकवादियों की ताकत को हराने के लिए अमृतसर के स्वर्ण मंदिर में सेना भेजने के लिए मजबूर होना पड़ा था। भिंडरावाले स्वर्ण मंदिर में छिपा हुआ था। यह महसूस करते हुए कि खालिस्तानी आंदोलन को खत्म किए बिना खत्म करना मुश्किल है, इंदिरा गांधी ने सेना प्रमुख अरुण कुमार वैद्य को स्वर्ण मंदिर में सैन्य कार्रवाई करने का आदेश दिया। उसने एक सैन्य अभियान भी चलाया और उसमें भिंडरावाले मारा गया। कार्रवाई के प्रतिशोध में दोनों मारे गए। एक खुद प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी हैं। और अन्य सामान्य चिकित्सक। 1986 में, उनकी सेवानिवृत्ति के सिर्फ छह महीने बाद, सिख हत्यारों ने पुणे की एक व्यस्त सड़क पर जनरल वैद्य की गोली मारकर हत्या कर दी, जिससे इंदिरा गांधी की हत्या की यादें ताजा हो गईं। यह पता चलने के बाद कि श्रीमती गांधी की उनके अपने सिख सुरक्षा गार्डों द्वारा हत्या कर दी गई थी, देश भर में सिखों के खिलाफ गुस्सा था। राजधानी दिल्ली में उनका सिर कलम कर दिया गया। खून बहाया गया। जगदीश टाइटलर, यह सज्जन कुमार जैसे कांग्रेसी नेता थे जिन्होंने श्रमिकों को उकसाया और सिखों के खिलाफ हिंसा भड़काई।राजीव गांधी की प्रतिक्रिया थी कि जब कोई बड़ा पेड़ गिरता है, तो छोटी झाड़ियाँ उसके नीचे दब जाती हैं। एक तरह से उन्होंने सिखों के सिर काटने का समर्थन किया। उनमें से कुछ पर बाद में मामला दर्ज किया गया और अदालत में सजा सुनाई गई, लेकिन क्रूर सिख नरसंहार के घाव नहीं भरे हैं। इस इतिहास का संबंध राहुल गांधी की हालिया अमेरिका यात्रा के दौरान एक सिख युवक द्वारा कांग्रेस की सिख विरोधी गतिविधियों के लिए लगाए जाने से है; यह उनके पास है। इंदिरा गांधी की हत्या के समय राहुल गांधी 14 साल के थे और उस समय कांग्रेस की राजनीति में उनकी कोई भूमिका होने की संभावना नहीं है। लेकिन वर्तमान में वह कांग्रेस के अघोषित अध्यक्ष हैं। इसलिए जबकि यह सच है कि 'तब' की घटनाओं से उनका कोई लेना-देना नहीं था, उनका वर्तमान कांग्रेस से सीधा संबंध है। इसलिए अगर उनसे उस पार्टी के ऐतिहासिक पापों के लिए वर्तमान में कुछ भी पूछा जा रहा है, तो अमेरिकी युवाओं के साथ कुछ भी गलत नहीं है। कार्रवाई पर कोई आपत्ति नहीं हो सकती। युवक का सवाल सिखों के खिलाफ कांग्रेस की नीति और कांग्रेस द्वारा अपने कुछ विवादास्पद नेताओं को दी गई सुरक्षा जैसे मुद्दों की पृष्ठभूमि के खिलाफ था, और राहुल गांधी ने पार्टी ने अपने इतिहास में जो किया है, उसके लिए माफी मांगी। उन्होंने कहा, 'जब यह हुआ तब मैं राजनीति में नहीं था. लेकिन मैं अभी भी मानता हूं कि जो हुआ वह गलत था और मैं इसकी जिम्मेदारी लेते हुए माफी मांगने से नहीं हिचकिचाऊंगा। 80 के दशक में तत्कालीन कांग्रेस नेतृत्व ने जो किया उसके लिए राहुल गांधी ने लोगों से माफी मांगी है।

अंतरराष्ट्रीय इतिहास में अपने कार्यों के लिए सार्वजनिक रूप से माफी मांगने वाले वर्तमान नेताओं के कई उदाहरण हैं: द्वितीय विश्व युद्ध में युद्ध के कैदियों के क्रूर उपचार के लिए जापान की माफी, लीबिया के लिए इटली का अनुरोध, बेल्जियम का अफ्रीकी कांगो, पोप फ्रांसिस के कनाडाई स्थानीय लोग, बिल क्लिंटन की मोनिका लुइंस्की, टाइगर वुड्स ने यौन दुराचार के लिए अपने प्रशंसकों से सार्वजनिक माफी के सैकड़ों उदाहरण जारी किए हैं। पश्चिमी देश और उनके नेता ऐतिहासिक गलतियों के लिए वर्तमान में क्षमा मांगने में संकोच नहीं करते हैं, जिनकी जड़ें धार्मिक संस्कारों में होनी चाहिए। बाइबल, ईसाइयों का धर्मग्रंथ, स्वीकार करता है कि एक आदमी स्खलित हो गया है और मानता है कि वह पश्चाताप के प्रायश्चित से पाप से मुक्त हो सकता है। बेशक, भारत में उत्पन्न होने वाले धर्मों में भी क्षमा महत्वपूर्ण है, जैसे बौद्ध धर्म और जैन धर्म। इसे फिर से उबालने का कोई कारण नहीं है। ऐसे कई राजनीतिक पंडित होंगे जो राहुल गांधी की आलोचना करने में उचित होंगे। इस बीच, अमेरिका में भाजपा के कुछ नेता उनकी माफी पर खुशी से फूटते दिख रहे हैं। भाजपा नेता राहुल गांधी पर देश ही नहीं विदेशों में भी प्रतिक्रिया देते हैं। इन लोगों को यह एहसास नहीं है कि यह उनके अपने बच्चे की समझदारी को दशार्ता है। उन्हें यह नहीं मानना चाहिए कि माफी मांगने में महानता है। अमेरिका जैसे देश में, स्थानीय रेड इंडियन को लंबे समय तक प्रताड़ित किया जा रहा था। इसे सरकार ने नजरअंदाज कर दिया था। वास्तव में, पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति जो बिडेन इन अत्याचारों में शामिल नहीं थे। उन्होंने अवसाद की जिम्मेदारी ली और स्थानीय लोगों से माफी मांगी। व्यापक उदारता के प्रदर्शन में माफी मांगने के कई अन्य उदाहरण हैं।

पाकिस्तान के साथ-साथ आंतरिक सुरक्षा भी महत्वपूर्ण

संजीव ठाकुर

भारत एक विशाल लोकतांत्रिक देश होने के साथ-साथ शांति सौहार्द्र और गुटनिरपेक्षता का पक्षधर रहा है पर वर्तमान में जब पाक समर्थित आतंकियों द्वारा पहलगाम में 27 निर्दोष भारतीयों की निर्मम हत्या कर दी गई है,भारत का यह देशवासियों के प्रति बनता है कि देशवासियों की रक्षा करे और उन आतंवादियों और उनको पनाह देने वाले व्यक्ति और देश को समूल नष्ट करे। भारत यदि पाकिस्तान पर हमला कर युध्य करता है तो यह भारत की तरफ से आक्रमण नही आत्म-सुरक्षात्मक आवश्यक कदम होगा,फिर यदि उसमे आतंकवादी मरें या कोई देश नेस्तनाबूद हो भारत को बिल्कुल भी फिक्र करने की जरा भी जरूरत नही है।

भारत संप्रभुता एकता तथा अखंडता का वैश्विक स्वच्छ एवं साफ-सुथरी छवि वाला एकमात्र बड़ा लोकतांत्रिक देश है। अमेरिका में भी लोकतंत्र है पर वहां पूंजीवादी व्यवस्था तथा व्यापक व्यवसायीकरण ने अनेक राष्ट्रों को विस्तार वादी तथा साम्राज्यवादी मानसिकता का बना दिया है। अमेरिका की शक्ति संपन्नता अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उसे एक असंवेदनहीन, लोकतांत्रिक एवं निरंकुश राष्ट्र के रूप में स्थापित कर चुकी है। अंतरराष्ट्रीय कूटनीति में अमेरिका और विभिन्न काल खंडों में अलग-अलग देशों को एक दूसरे से युद्ध करने के उकसाने के लिए बदनाम रहा है, और उसकी इस इस कूटनीति का सबसे बड़े एवं तात्कालिक उदाहरण अफगानिस्तान में तालिबान आतंकवादियों का कब्जा एवं और रूस यूक्रेन युद्ध में यूक्रेन अमेरिकी तथा अमेरिकी समर्थित नैटो एवं यूरोपीय देशों की भूमिका ही रही है। इसी तरह इसराइल हमास युद्ध में इसराइल को खुला समर्थन देकर अमेरिका ने विस्तारवाद तथा साम्राज्यवाद की आग को हवा देने का काम किया है और लगभग चारों देशो के लाखों लोगों की जान को जिंदगी से वंचित कर दिया है। भारत एक विशाल लोकतांत्रिक देश होने के साथ-साथ शांति सौहार्द्र और गुटनिरपेक्षता का पक्षधर रहा है।

भारत देश में सदैव वैश्विक शांति का संदेश ही दिया है, यह अलग बात है कि भारत में धार्मिक सामाजिक आर्थिक विविधता विषमता के कारण अंदरूनी विवादों तथा आतंकवादी गतिविधियों के कारण अशांत रहने पर मजबूर किया है। भारत की आंतरिक सुरक्षा भी पिछले 20 वर्षों से अलग-अलग शहरों यहां तक संसद भवन के हमलों और कश्मीर में विभिन्न समय तथा स्थानों पर आतंकवादी हमलों ने भारत की आंतरिक व्यवस्था में उथल-पुथल मचाने का प्रयास किया है, भारत की शक्ति और सामर्थ्य इतनी सक्षम है कि आतंकवादियों के हमलों का भारत सरकार ने समय-समय पर मुंहतोड़ जवाब भी दिया है। पठानकोट और पुलवामा हमले इसके सबसे सशक्त और सक्षम मामले हैं जहां भारत ने पाकिस्तान में घुसकर आतंकवादियों के ठिकानों को नष्ट किया है। जम्मू कश्मीर में भी छुटपुट घटनाओं के अलावा स्वतंत्रता के बाद से शांति का माहौल स्थापित हुआ है। जहां तक भारत की सीमा के विवाद का प्रश्न है तो भारत भौगोलिक रूप से एशिया के दक्षिणी भाग में स्थित है और भारत की सीमाएं 7 जिनमें चीन, नेपाल, म्यानमार ,भूटान, श्रीलंका, बांग्लादेश और पाकिस्तान देश शामिल हैं। भारत सदैव अपने पड़ोसियों से शांति के संबंध स्थापित रखना चाहता है। भारत की विदेश नीति गुटनिरपेक्ष एवं शांति, सद्भावना की रही है। भारत के साथ पड़ोसी देशों में भूटान,बांग्लादेश श्रीलंका ,मालदीव ,सदैव भारत के साथ मित्रवत रहे हैं किंतु चीन तथा पाकिस्तान ने हमेशा भारत के हितों का नुकसान की चाहा है भूटान, बांग्लादेश, और बांग्लादेश ने भारत से अपने संबंध अपने हितों से जोड़कर कई संधियों में हस्ताक्षर किए ,जिसके कारण दोनों देशों ने मिलकर कई पावर प्लांट, पावर ट्रांसमिशन लाइन,1 बंदरगाह की विकास रेल लाइन निर्माण आदि में एक दूसरे का साथ दिया है पर आज बांग्लादेश भारत का बड़ा दुश्मन बन चुका है, मालदीव एक एसा देश है जिसका दक्षिण तथा अरब सागर में सामरिक महत्व है, इसलिए भारत के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। चीन पाकिस्तान के अलावा नेपाल से भी भारत के संबंध बहुत मधुर कभी नहीं रहे हैं नेपाल में चीन तथा पाकिस्तान के हस्तक्षेप के कारण नेपाल भारत की आलोचना करता आया है। पाकिस्तान का इस्लामिक कट्टरपंथ एवं वहां की सेना तथा पाकिस्तानी शासन के हुक्मरान भारत को अपना दुश्मन नंबर एक मानते हैं। भारत का नेपाल के साथ सीमा विवाद है जिसके चलते नेपाल का नजरिया भारत के प्रति बदलता गया है। भारत और चीन के संबंध 1962 के बाद से सभी सामान्य नहीं रहे हैं। लाइन आफ एक्चुअल कंट्रोल में चीन ने अरुणाचल प्रदेश तथा लद्दाख में सदैव अतिक्रमण किया है और भारत का चीन से डोकलाम, पपेंगांग, गलवान क्षेत्रों में सैनिक स्तर का विवाद होता रहा है और एलएसी पर चीन और भारत में बड़ी संख्या में सैनिकों को तैनात किया है। इसी बात में अमेरिका भारत के साथ है किंतु रूस इस मामले में निरपेक्ष नीति अपनाए हुए हैं। यह अलग बात है कि अमेरिका भारत का स्वतंत्रता के बाद से तभी सहयोगी मित्र नहीं रहा है और रूस ने परंपरागत रूप से अपनी मित्रता भारत के साथ अलग-अलग घटनाओं तथा युद्धों में साबित की है। यह तो तय है कि भारत में आतंकी गतिविधियां आंतरिक सुरक्षा के लिए हमेशा खतरा बनी हुई थी और है। इसके अलावा एल ए सी तथा एलओसी में चीन तथा पाकिस्तान जैसे देशों से हमें मुकाबला करना होगा। पाकिस्तान दिवालिया होने की कगार पर है पर चीन की मदद तथा उकसावे के कारण पाकिस्तान भारत को एक बड़ा दुश्मन मानती है। वैसे तो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत सरकार की सभी देशों से अच्छी मित्रता है एवं भारत को शांति का पक्षधर माना जाता है किंतु रूस यूक्रेन युद्ध में यह बात एकदम स्पष्ट उभर कर आई है कि किसी भी युद्ध में देश को अपनी सुरक्षा खुद की शक्ति एवं सामर्थ्य से करनी होगी। अमेरिका जैसे देश बाहर से तमाशा देखने वाले देशों में माने जाते हैं। अतः भारत को अपनी आंतरिक तथा सीमा की सुरक्षा स्वयं के शक्ति तथा सामर्थ से ही करनी होगी एवं हमेशा सतर्कता बरतनी होगी।

देश में ऑनलाइन लूडो के बढ़ते खतरे पर कैसे लगेगी लगाम

-अजय कुमार

रमेश, एक मध्यमवर्गीय परिवार का साधारण युवक था। शहर के एक निजी कंपनी में मामूली वेतन पर काम करता और अपने छोटे से परिवार के साथ खुशहाल जीवन बिता रहा था। उसकी दिनचर्या काम से घर और कभी-कभार दोस्तों के साथ चाय पीने तक ही सीमित थी। लेकिन कुछ महीने पहले, उसके एक सहकर्मी ने उसे ऑनलाइन लूडो के एक ऐप के बारे में बताया। शुरूआत में रमेश ने इसे सिर्फ मनोरंजन का एक साधन समझा। काम से लौटने के बाद या खाली समय में वह दोस्तों या अनजान लोगों के साथ लूडो खेलता, और कभी-कभार छोटी-मोटी बाजी भी लगा लेता।

शुरूआत में सब कुछ रोमांचक और मजेदार लग रहा था। जीत की खुशी और हार का मामूली गम, यह सब उसकी नीरस जिंदगी में एक नया रंग भर रहा था। धीरे-धीरे, रमेश इस खेल का आदी होता चला गया। अब वह काम के दौरान भी चोरी-छिपे लूडो खेलने लगा था, और घर पर परिवार को कम समय देता था। उसकी पत्नी अक्सर शिकायत करती कि वह अब पहले जैसा नहीं रहा, हमेशा फोन में ही घुसा रहता है। रमेश इन बातों को अनसुना कर देता, उसे तो बस अगली बाजी जीतने की धुन सवार रहती थी। एक दिन, रमेश ने एक बड़े दांव पर अपनी महीने भर की कमाई लगा दी। उसे पूरा भरोसा था कि वह जीत जाएगा, लेकिन किस्मत ने उसका साथ नहीं दिया और वह बुरी तरह हार गया। इस हार ने उसे अंदर तक झकझोर दिया। वह समझ नहीं पा रहा था कि अब वह घर कैसे चलाएगा और अपनी पत्नी को क्या जवाब देगा। रातों की नींद उड़ गई, और वह हर समय उदास और चिड़चिड़ा रहने लगा। रमेश अकेला नहीं था जो इस ऑनलाइन लूडो के जाल में फंसा था। भारत में ऑनलाइन लूडो का चलन तेजी से बढ़ रहा है, खासकर युवाओं और कम आय वर्ग के लोगों के बीच। इसकी आसान उपलब्धता और कम समय में ज्यादा पैसे कमाने के लालच ने लाखों लोगों को अपनी गिरफ्त में ले लिया है। यह सिर्फ एक खेल नहीं रह गया है, बल्कि एक तरह का नशा बन गया है जो लोगों की जिंदगी बर्बाद कर रहा है।

ऑनलाइन लूडो के कई खतरे हैं जिन पर ध्यान देना जरूरी है। सबसे पहला खतरा है आदत लगना और लत में बदलना। यह खेल इतना आकर्षक और आसान है कि लोग आसानी से इसके आदी हो जाते हैं। लगातार खेलने की इच्छा और हर बार जीतने की उम्मीद उन्हें घंटों तक स्क्रीन से चिपके रहने पर मजबूर कर देती है, जिससे उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। नींद की कमी, आंखों में दर्द, तनाव और चिंता जैसी समस्याएं आम हो जाती हैं। दूसरा बड़ा खतरा है वित्तीय नुकसान। ऑनलाइन लूडो में अक्सर पैसे की बाजी लगाई जाती है। जीतने का लालच लोगों को अपनी जमा पूंजी और यहां तक कि कर्ज लेकर भी दांव लगाने के लिए प्रेरित करता है। हारने पर उन्हें भारी वित्तीय नुकसान उठाना पड़ता है, जिससे उनके परिवार की आर्थिक स्थिति खराब हो जाती है। कई मामले ऐसे सामने आए हैं जहां लोगों ने कर्ज के बोझ तले दबकर आत्महत्या तक कर ली है। तीसरा खतरा है सामाजिक अलगाव। जो लोग ऑनलाइन लूडो के आदी हो जाते हैं, वे धीरे-धीरे अपने परिवार और दोस्तों से दूर होने लगते हैं। उन्हें वास्तविक दुनिया से कोई सरोकार नहीं रह जाता और वे अपनी आभासी दुनिया में ही खोए रहते हैं। इससे उनके सामाजिक संबंध कमजोर हो जाते हैं और वे अकेलेपन का शिकार हो जाते हैं। चौथा खतरा है धोखाधड़ी और जालसाजी। ऑनलाइन लूडो प्लेटफॉर्म पर कई ऐसे मामले सामने आए हैं जहां खिलाड़ियों के साथ धोखाधड़ी की जाती है। कुछ ऐप गैरकानूनी तरीके से काम करते हैं और खिलाड़ियों से पैसे ऐंठ लेते हैं। इसके अलावा, कुछ खिलाड़ी हैकिंग या अन्य गलत तरीकों का इस्तेमाल करके दूसरों को हराते हैं, जिससे ईमानदार खिलाड़ियों को नुकसान होता है।

अब सवाल यह उठता है कि इस ऑनलाइन लूडो के बढ़ते खतरे पर लगाम कैसे लगाई जाए? इसके लिए कई स्तरों पर काम करने की जरूरत है। सबसे पहले लोगों को ऑनलाइन लूडो के खतरों के बारे में जागरूक करना होगा। इसके लिये सरकार और गैर-सरकारी संगठनों को मिलकर जागरूकता अभियान चलाने चाहिए। स्कूलों और कॉलेजों में छात्रों को इसके नकारात्मक प्रभावों के बारे में बताना चाहिए। मीडिया भी इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। लोगों को यह समझना होगा कि यह सिर्फ एक मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि एक गंभीर लत बन सकता है जो उनकी जिंदगी बर्बाद कर सकता है। इसके अलावा ऑनलाइन लूडो प्लेटफॉर्म को कानूनी दायरे में लाना जरूरी है। सरकार को ऐसे नियम और कानून बनाने चाहिए जो इन प्लेटफॉर्म की गतिविधियों को नियंत्रित करें और खिलाड़ियों के हितों की रक्षा करें। सट्टेबाजी को बढ़ावा देने वाले ऐप्स पर प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए। ऑनलाइन गेमिंग प्लेटफॉर्म के लिए लाइसेंसिंग और विनियमन की व्यवस्था होनी चाहिए ताकि धोखाधड़ी और जालसाजी को रोका जा सके। ऑनलाइन लूडो ऐप्स में ऐसे फीचर होने चाहिए जो खिलाड़ियों को अपनी खेलने की सीमा निर्धारित करने और समय-समय पर ब्रेक लेने के लिए प्रोत्साहित करें। ऐप्स में एक चेतावनी प्रणाली होनी चाहिए जो खिलाड़ियों को अत्यधिक खेलने या पैसे गंवाने पर सतर्क करे। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग का उपयोग करके लत लगने के शुरूआती लक्षणों का पता लगाया जा सकता है और खिलाड़ियों को समय पर सहायता प्रदान की जा सकती है।

ऑनलाइन लूडो की लत के जो लोग शिकार हो चुके हैं, उन्हें मानसिक स्वास्थ्य सहायता प्रदान करना भी जरूरी है। सरकार को नशा मुक्ति केंद्रों और हेल्पलाइन नंबरों की स्थापना करनी चाहिए जहां ऐसे लोग मदद मांग सकें। परिवार और दोस्तों को भी ऐसे लोगों का समर्थन करना चाहिए और उन्हें इस लत से बाहर निकलने में मदद करनी चाहिए।इसके अलावा माता-पिता को अपने बच्चों की ऑनलाइन गतिविधियों पर नजर रखनी चाहिए। उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनके बच्चे ऑनलाइन लूडो या किसी अन्य हानिकारक ऑनलाइन गेम के आदी न हों। बच्चों को स्क्रीन टाइम को सीमित करने और अन्य रचनात्मक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

बहरहाल,विभिन्न राज्यों में ऑनलाइन लूडो और अन्य ऑनलाइन गेम्स को बढ़ावा देने वाले स्टार प्रचारकों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की खबरें भी सामने आती रहती हैं। सितंबर 2024 में, तमिलनाडु ऑनलाइन गेमिंग अथॉरिटी (टीएनओजीए) ने ऑनलाइन सट्टेबाजी और जुए को बढ़ावा देने के लिए लगभग आधा दर्जन यूट्यूबर, इंस्टाग्राम इन्फ्लुएंसर और एक निजी फर्म के खिलाफ कानूनी कार्रवाई शुरू की।टीएनओजीए ने इन सोशल मीडिया हस्तियों को कारण बताओ नोटिस जारी किए और उनके जवाबों से असंतुष्ट होने पर मेट्रोपॉलिटन मजिस्ट्रेट कोर्ट, सैदापेट में कानूनी कार्यवाही शुरू की। यदि दोषी पाए जाते हैं, तो उन्हें 5 लाख से 10 लाख रुपये तक का जुमार्ना और तीन साल तक की जेल हो सकती है।खबरों के अनुसार, कुछ फिल्म हस्तियां जो पहले सोशल मीडिया के माध्यम से ऑनलाइन सट्टेबाजी और जुए को बढ़ावा देने में शामिल थीं, वे भी जांच के दायरे में हैं। कुल मिलाकर रमेश की कहानी एक चेतावनी है। उसने मनोरंजन के लिए शुरू किया था, लेकिन कब वह इस जाल में फंस गया उसे पता ही नहीं चला। वित्तीय नुकसान और पारिवारिक कलह के बाद, उसे अपनी गलती का एहसास हुआ। उसने एक मनोचिकित्सक से सलाह ली और धीरे-धीरे इस लत से बाहर निकलने की कोशिश कर रहा है। उसकी कहानी उन लाखों लोगों के लिए एक सबक है जो ऑनलाइन लूडो को हल्के में ले रहे हैं।

भारत में आतंकवाद एक गंभीर समस्या

-विक्रम दयाल

-विक्रम दयाल

आतंकवाद मानवता के लिए भारत नें सबसे बड़ा खतरा है। भारत में आतंकवाद एक गंभीर समस्या है। जिसके कई कारण और दुष्परिणाम हैं। समाधान के लिए सरकार को आतंकवाद से निपटने के लिए कई कदम उठाये जा रहे हैं। जैसेकी खुफिया जानकारी साझा करना, सीमा सुरक्षा में सुधार, और आतंकवादी संगठनों के खिलाफ उचित और कठोर कार्यवाई करना। भारत में आतंकवाद के कारण अकारण बहुत लोगों को अपनी जान तक गवाना पड़ता है। कारणः अलगाववाद काश्मीर, पूर्वोत्तर भारत और अन्य क्षेत्रों में अलगाववादी आंदोलन आतंकवाद का एक प्रमुख कारण है। धार्मिक कट्टरता; कुछ धार्मिक समूहों का मानना है कि आतंकवाद एक पवित्र कर्तव्य है? राजनीतिक अस्थिरताः कई राजनीतिक दल आतंकवाद का उपयोग सत्ता में बने रहने के लिए करते हैं। सामाजिक और आर्थिक असमानताः गरीबी और बेरोजगारी, और सामाजिक भेदभाव भी आतंकवाद को बढ़ावा देते हैं। दुष्परिणामः जानमाल का नुकसानः आतंकवादी हमले से कई बेगुनाह लोगों सी जान जाती है संपत्तियों का नुकसान होता है। आर्थिक नुकसानः आतंकवाद से पर्यटन उद्योग और विदेशी निवेश प्रभावित होता है। जिससे देश को आर्थिक नुकसान होता है। सामाजिक तनावः आतंकवाद से समाज में तनाव और भय पैदा होता है। मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभावः आतंकवादी हमलों से लोगों में मानसिक तनाव, और अवसाद पैदा हो सकता है। भारत में आतंकवाद के समाधानः सरकार को राज्य और संघीय एजेंसियों के बीच खुफिया जानकारी साझा करने की मजबूती पर बल देना होगा। सीमा सुरक्षा में सुधारः भारत को अपनी सीमाओं को सुरक्षित करना चाहिए और बढ़ते घुसपैठ पर लगाम लगाने की अत्यंत जरूरत है। आतंकवादी संगठनों के खिलाफ कठोर कार्यवाईः सरकार को आतंकवादी संगठनों के खिलाफ कठोर कार्यवाई करना चाहिए। आतंकवाद के कारणों को दूर करनाः सरकार को गरीबी, बेरोजगारी, और सामाजिक भेदभाव दूर करने के प्रयास करना चाहिए। जनसाझेदारीः सरकार का काम, देश के लोगों को जागरूक करना चाहिए और उनसे आतंकवाद के खिलाफ सहयोग करने के लिए कहना चाहिए।

कठोर कानून : आतंकवाद से निपटने के लिए सरकार को सख्त कानून बनाने चाहिए। अंतरराष्ट्रीय सहयोगः सरकार को आतंकवाद के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय सहयोग करना चाहिए। भारत को उन देशों पर दबाव बनाना चाहिए, जो आतंकवाद को समर्थन देते हैं। आतंकवाद एक गंभीर समस्या है। जो भारत के लिए एक चुनौती है। समाधान के लिए सरकार को आतंकवाद के कारणों को दूर करने के लिए और आतंकवादी संगठनों के खिलाफ कठोर कार्यवाई करने की जरूरत है। सरकार देश के लोगों को जागरूक करे और आतंकवाद के खिलाफ लोगों को सहयोग करने के लिए कहना चाहिए। देशकी आवाज आतंकवाद का हो पक्का इलाज।

एयरटेल बिजनेस से उद्यमियों के लिए बीएनडी सेवा की शुरूआत की

मुंबई। एयरटेल बिजनेस ने आज 'बिजनेस नेम डिस्प्ले' (बीएनडी) सेवा के लॉन्च की घोषणा की है। यह सेवा उद्योग में अपनी तरह की पहली, नई तकनीक पर आधारित सुविधा है, जिसका उद्देश्य कंपनियों और उपभोक्ताओं के बीच होने वाले संवाद को अधिक विश्वसनीय और प्रभावी बनाना है। इस सेवा के जरिए कंपनियां, अपनी आउटगोइंग कॉल्स के दौरान ग्राहकों के मोबाइल स्क्रीन पर अपना ब्रांड नाम प्रदर्शित कर सकेंगी, जिससे ग्राहकों को भरोसेमंद बिजनेस कॉल्स और स्पैम कॉल्स के बीच आसानी से अंतर करने में मदद मिलेगी। एयरटेल ने अपने ग्राहकों को स्पैम कॉल्स से राहत दिलाने के लिए भारत का पहला स्पैम-रोधी नेटवर्क शुरू किया है। इस पहल को देशभर में चलाए गए एक बड़े जनजागरूकता अभियान के जरिए ग्राहकों तक पहुंचाया गया, ताकि वे इस समस्या को बेहतर तरीके से समझ सकें और सतर्क रह सकें। इस पहल के चलते एक ओर जहां स्पैम कॉल्स को लेकर लोगों में जागरूकता बढ़ी और उन्होंने अनजान या स्पैम के रूप में चिन्हित कॉल्स को अनदेखा करना शुरू किया, वहीं दूसरी ओर इसका एक अनचाहा असर यह हुआ कि कई ब्रांड्स की कॉल्स भी स्पैम के तौर पर टैग हो गईं। इस वजह से ग्राहक कई बार बैंकों, फूड डिलीवरी, कूरियर सेवा या डॉक्टर की जरूरी अपॉइंटमेंट जैसी अहम कॉल्स मिस कर देते थे। बिजनेस नेम डिस्प्ले इस समस्या का सीधा और सुरक्षित समाधान है। यह सेवा हर इनकमिंग कॉल में कंपनी का नाम दिखाकर ग्राहकों को स्पष्ट जानकारी देती है, जिससे वे सोच-समझकर फैसला ले सकें। इससे कंपनियां अपनी पहचान बेहतर ढंग से बना सकती हैं और ग्राहक धोखाधड़ी से सुरक्षित रहते हैं, जिससे एक भरोसेमंद और सुरक्षित संचार का माहौल बनता है।

जिले में आवास प्लस 2.0' सर्वेक्षण ने पकड़ी रफ्तार डहाणू तहसील सबसे आगे

पालघर(उत्तरशक्ति)। प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) झ पीएमएवाई - जी चरण 2 के अंतर्गत पात्र परिवारों की पहचान के लिए चल रहा आवास प्लस 2024 सर्वेक्षण पालघर जिले में तेजी से आगे बढ़ रहा है। 4 मई 2025 तक जिले में कुल 11,465 परिवारों का सर्वेक्षण सफलतापूर्वक पूरा किया गया है। इनमें से 10,240 सर्वे सहायकों द्वारा किया गया, जबकि 1,558 लाभार्थियों ने स्वयं ऐप के माध्यम से अपना सर्वेक्षण किया। पीएमएवाई - जी योजना का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में कच्चे या बिना मकान वाले गरीब परिवारों को पक्के घर उपलब्ध कराना है। ह्यआवास प्लसह्न इसी योजना का एक पूरक सर्वेक्षण है, जिसके माध्यम से वर्ष 2018 के बाद छूटे पात्र परिवारों को सूचीबद्ध किया जाता है। तहसीलवार सर्वेक्षण के आंकड़ों के अनुसार डहाणू तहसील सबसे आगे है, जहाँ अब तक 2,607 परिवारों का सर्वेक्षण किया गया है। इसके बाद पालघर (2,300), मोखाड़ा (2,212), विक्रमगढ़ (2,066), और वाडा (1,004) तहसील ने भी उल्लेखनीय प्रगति दिखाई है। तलासरी (818), जव्हार (530) और वसई (261) तहसील में सर्वेक्षण की रफ्तार तुलनात्मक रूप से धीमी रही है। 4 मई को अकेले दिन में पूरे ज़िले में 2,418 सर्वेक्षण किए गए, जिनमें से अधिकतम डहाणू, विक्रमगढ़, मोखाड़ा, वाडा और पालघर तहसील में हुए। जिला ग्रामीण विकास प्राधिकरण की परियोजना संचालिका डॉ. रूपाली सातपुते ने जानकारी दी कि पात्र नागरिक अपने गांव के सर्वेक्षण दल से संपर्क करें और चाहें तो आवास प्लस 2.0 ऐप के माध्यम से स्वयं भी सर्वेक्षण कर सकते हैं। मुख्य कार्यकारी अधिकारी मनोज रानडे ने सभी ग्राम सेवकों और ग्राम पंचायत अधिकारियों को सर्वेक्षण कार्य को नियोजित और सटीक ढंग से करने के निर्देश दिए हैं। ज़िला परिषद की निगरानी में तहसीलवार प्रगति पर लगातार नजर रखी जा रही है और लक्ष्य समयबद्ध ढंग से पूरा करने की योजना बनाई गई है।

अतिरिक्त शिक्षकों का समायोजन मुंबई में किए जाने की मांग बढ़ी

मुंबई। एक तरफ मुंबई में गर्मी की छुट्टी शुरू हो गई है वहीं दूसरी ओर अतिरिक्त शिक्षकों का समायोजन मुंबई के बाहर किए जाने की खबर से अतिरिक्त शिक्षकों में आक्रोश व्याप्त है। बता दें कि हाल ही में मुंबई शहर और उपनगरों के अनेक स्कूलों के अतिरिक्त शिक्षकों का समायोजन मुंबई जिले के बाहर किया गया। इस कारण अतिरिक्त शिक्षकों द्वारा विरोध प्रदर्शन किया गया। वहीं अतिरिक्त शिक्षकों का समायोजन मुंबई में किए जाने की मांग बढ़ती जा रही है। मुंबई कांग्रेस रोजगार व स्वयं रोजगार विभाग के महासचिव डॉ सत्तार खान ने राज्य के शिक्षा मंत्री और मुंबई के उपसंचालक से मांग की है कि सरकार को अतिरिक्त शिक्षकों को मुंबई में समायोजित करने का निर्णय लेना चाहिए। डॉ सत्तार खान के मुताबिक बृहन्मुंबई के मनपा स्कूलों में अनेक रिक्तियों के बावजूद, लगभग 525 अतिरिक्त शिक्षकों को ठाणे, पालघर, रायगढ़ जैसे दूरदराज के इलाकों में समायोजित किया गया है। उन्होंने यह भी बताया कि इन अतिरिक्त शिक्षकों में महिलाओं की बड़ी भागीदारी है और उनके लिए ऐसी जगहों पर रोजाना यात्रा करना बहुत ही मुश्किल है। शिक्षकों का आरोप है कि इस समायोजन प्रक्रिया में आयु सीमा, बीमारी, एकल माता-पिता जैसे संवेदनशील मामलों पर ध्यान नहीं दिया गया।

टेलीविजन और फिल्म अभिनेता एजाज खान ने महिंद्रा थार रॉक्स खरीदी

मुंबई। टेलीविजन और फिल्म अभिनेता एजाज खान ने हाल ही में अग्रणी महिंद्रा डीलरशिप महिंद्रा मोदी से नई महिंद्रा थार रॉक्स खरीदी है। अपनी दमदार डिजाइन और ऑफ-रोड क्षमताओं के लिए पहचानी जाने वाली महिंद्रा थार रॉक्स उन लोगों के लिए उपयुक्त विकल्प है जो स्टाइल और मजबूती दोनों को महत्व देते हैं। महिंद्रा मोदी द्वारा डिलीवरी की गई नई महिंद्रा थार रॉक्स लोकप्रिय टीवी शो और फिल्मों में अपने काम के लिए जाने जाने वाले एजाज की वाहनों के प्रति व्यावहारिक रुचि और साहसिक-तैयार एसयूवी में उनकी बढ़ती रुचि को दशार्ता है।

प्रतिष्ठित वर्ल्ड ज्यूरिस्ट एसोसिएशन से सम्मानित होने वाले पहले भारतीय अधिवक्ता बने भुवन ऋभु

मुंबई/पटना। प्रख्यात बाल अधिकार कार्यकर्ता व अधिवक्ता भुवन ऋभु को वर्ल्ड लॉ कांग्रेस में वर्ल्ड ज्यूरिस्ट एसोसिएशन ने प्रतिष्ठित मेडल ऑफ ऑनर पुरस्कार से सम्मानित किया। भुवन ऋभु यह अंतरराष्ट्रीय सम्मान पाने वाले पहले भारतीय अधिवक्ता हैं। इस वर्ल्ड लॉ कांग्रेस में 70 देशों के 1500 से ज्यादा विधिक क्षेत्र के दिग्गजों व 300 वक्ताओं ने हिस्सा लिया, जहां दुनिया की इस सबसे पुरानी ज्यूरिस्ट एसोसिएशन ने कानूनी हस्तक्षेपों और जमीनी लामबंदियों के जरिए बच्चों और उनके अधिकारों की सुरक्षा की दिशा में दो दशक से जारी संघर्षों और उपलब्धियों के लिए भुवन ऋभु को सम्मानित किया। यह कांग्रेस डोमिनिकन रिपब्लिक में 4 से 6 मई के बीच संपन्न हुई।वर्ष 1963 में स्थापित वर्ल्ड ज्यूरिस्ट एसोसिएशन दुनिया के विधिवेत्ताओं की सबसे पुरानी संस्था है जिसने न्याय के शासन की स्थापना में अपने योगदान के लिए विंस्टन चर्चिल, नेल्सन मंडेला, रूथ बेडर गिन्सबर्ग, स्पेन के राजा फेलिप षष्टम्, रेने कैसिन और कैरी कैनेडी जैसी ऐतिहासिक हस्तियों को सम्मानित किया है।

विधायक स्नेहा दुबे ने मनपा आयुक्त के साथ भराव से प्रभावित इलाकों का किया निरीक्षण

वसई (उत्तरशक्ति)। वसई विधायक स्नेहा दुबे ने हाल ही में वसई-विरार शहर महानगरपालिका के आयुक्त अनिल कुमार पवार के साथ वसई विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न क्षेत्रों में नालों और जल भराव से प्रभावित इलाकों का निरीक्षण किया। इस निरीक्षण का उद्देश्य क्षेत्र में विभिन्न विकास कार्यों की स्थिति का जायजा लेना और नालों की सफाई एवं मरम्मत के लिए आवश्यक कदम उठाना था।

निरीक्षण के दौरान निम्नलिखित स्थानों का दौरा किया गया। जिसमें नरवीर चिमाजी अप्पा स्मारक कार्य, नवघर कब्रिस्तान में नाला, पुलिया संख्या 78 पर नाला, वसई-विरार

नगर निगम कुत्ता नसबंदी केंद्र, सूर्या गार्डन में नाला, मानिकपुर नाका से दत्तानी तक पैचवर्क कार्य, दत्ताणी के सामने नाला, म्हाम्बरे में नाला, राइस मार्केट बंगाली में नाला, पाचू बंदरगाह पर नाला, किला बंदर में नाला शामिल है। इस दौरान उपस्थित अधिकारियों को कार्यों को समय पर और गुणवत्तापूर्वक पूरा करने का निर्देश दिया गया। विधायक स्नेहा दुबे ने लोगों की समस्याओं को सुनने और उनका त्वरित समाधान करने का संकल्प व्यक्त किया। निरीक्षण में आयुक्त अनिल कुमार पवार, अपर आयुक्त संजय हेरवाडे, उपायुक्त नानासाहेब कामठे, सहायक आयुक्त श्रीमती संगीता घाडीगांवकर, अन्य संबंधित अधिकारी और भाजपा पदाधिकारी भी शामिल थे।

नाला सफाई को लेकर पूर्व नगरसेवक संतोष शेट्टी का मनपा अधिकारियों व सफाई कर्मचारियों को दी हिदायत

आचार्य सूरजपाल यादव

भिवंडी(उत्तरशक्ति)। मानसून से पहले भिवंडी मनपा अधिकारियों व नाला सफाई ठेकेदारों व स्थानीय नागरिकों का समन्वय बनाने के लिये पूर्व नगरसेवक संतोष शेट्टी ने राजू चाल व पद्मानगर क्षेत्र के नाला सफाई का जायजा लेते हुये मनपा अधिकारियों व ठेकेदारों को समय समय पर नाला सफाई की हिदायत दी है। बतादें कि मानसून आने पर नाला सफाई नहीं होने पर भिवंडी वासियों को जल जमाव से भारी आर्थिक नुकसान उठाना पडता है वहीं नाला सफाई में भ्रष्टाचार का मामला जगजाहिर है। संतोष शेट्टी ने इसके लिये पद्मानगर क्षेत्र में नाला सफाई पर विशेष ध्यान दे रहे हैं। वहीं स्थानीय नागरिकों से भी कचरा कचरा कुंडी में डालने की अपील किया है और आने वाले समय में अपने क्षेत्र को साफ सुधरा रखने की अपील करते हुए कहा कि अपने क्षेत्र को स्वच्छ रखने से मौसमी बीमारियों के प्रति सजग रहते हुये अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखे।

प्रभाकर चंद्रशेखर शुक्ल को लोकाधिकार सेवा समिति का चुना गया अध्यक्ष

मुंबई (उत्तरशक्ति)। लोकाधिकार सेवा समिति एक रजिष्टर्ड स्वयं सेवी जन कल्याणकारी संस्था हैं। जो कि स्वनिधि से विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से वर्ष भर जनहित मे कार्य करती रहती है। संस्था सामूहिक विवाह रक्त दान शिविर, जेल मे अवरुद्ध कैदियों हेतु विभिन्न सुविधाएं मानस प्रवचन, कवि सम्मेलन, ठंडी मे मुक्त कंवल वितरण, दृष्टि वाधित लोगों हेतु मुफ्त नेत्र परीक्षण एवं चश्मा वितरण, विकलांगों हेतु विभिन्न उपकरण उपलब्ध कराती रहती है। गौरतलब है इस संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष चंद्रशेखर शुक्ल थे जिनका गत दिनों निधन हो गया। पूर्व अध्यक्ष के निधन के पश्चात घाटकोपर वेस्ट मुंबई में समिति की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में सर्वसम्मति से प्रभाकर चंद्रशेखर शुक्ल को राष्ट्रीय अध्यक्ष नियुक्त किया गया। उनके इस नियुक्ति पर दिवाकर मिश्र, रामबिलास पाठक,राजकुमार तिवारी, बाबुलनाथ तिवारी, दलजीत

पांडेय,सर्वदेव पांडेय, हरीश पांडेय, देवेंद्र प्रताप सिंह, चंद्रेश दुबे,बृजेश शुक्ल,पत्रकार संतोष पाठक,पत्रकार एवं विशेष कार्यकारी अधिकारी आदेश मिश्र, रत्नेश शुक्ल, जयसिंहपुर प्रमुख राहुल शुक्ल,दिनेश सिंह, अरविंद शुक्ल, शुभम सिंह,अवधेश तिवारी, रामतीरथ शर्मा,संदीप दुबे, ब्रह्मदेव दुबे, बब्लू तिवारी, अंजनी यादव सहित तमाम शुभचिंतकों और समर्थकों ने नव नियुक्त राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रभाकर शुक्ल के प्रति खुशी जाहिर करते हुए व्यक्तिगत अथवा दूरभाष के द्वारा उन्हें हार्दिक शुभकामनाएं दी।

नेस्ले इंडिया ने भिवंडी में ऑटोमेटेड और पेपरलेस डिस्ट्रिब्यूशन सेंटर किया लॉन्च

ठाणे (उत्तरशक्ति)। नेस्ले इंडिया ने हाल ही में महाराष्ट्र के भिवंडी में अपना अत्याधुनिक डिस्ट्रिब्यूशन सेंटर (डीसी) शुरू किया है। यह सेंटर इस बात का प्रतीक है कि कंपनी तकनीक को प्रगति की अहम ताकत मानती है। यह नेस्ले इंडिया का पहला ऐसा डीसी है, जिसमें डिजिटल ट्विन टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल किया गया है। यह एक वर्चुअल टूल है, जो गोदाम संचालन के लिए अलग-अलग परिस्थितियों की कल्पना कर बेहतर योजना और तैयारी में मदद करता है। यह सेंटर एआई-सक्षम सीसीटीवी, ऑपरेशंस कमांड हब, डिजिटल रैक निरीक्षण प्रणाली और सेंसरयुक्त मटेरियल हैंडलिंग उपकरणों से भी लैस है, जो सुरक्षा व्यवस्था को और मजबूत बनाते हैं। इस सेंटर में करीब 20,000पैलेट पोजिशन हैं और यह चॉकलेट के

लिए सबसे बड़े कोल्ड स्टोरेज रूम में से एक है। महज सात महीनों में तैयार हुआ यह सेंटर न सिर्फ लॉजिस्टिक्स में उद्योग मानकों को नई ऊँचाई देता है, बल्कि इसमें भारत का पहला शटल रैकिंग सिस्टम भी लगाया गया है – यह एक सघन रैकिंग प्रणाली है जो वेयरहाउस में जगह की बेहतर उपयोगिता सुनिश्चित करता है। यह पूरी तरह से डिजिटल संचालित है, जिससे यह एक पेपरलेस फैसिलिटी बन जाता है।

नेस्ले इंडिया के सप्लाई चेन प्रमुख वरुण गुप्ता ने कहा, क्षमता, तेजी, सुरक्षा और स्थायित्व हमारी वैल्यू चेन के मूल तत्व हैं, जिन्हें हम उत्पाद और जानकारी के एक समान प्रवाह से हासिल करते हैं। भिवंडी डिस्ट्रिब्यूशन सेंटर हमारी टीम के नवाचार और प्रयासों का बेहतरीन उदाहरण है। यहां ऑप्टिमल ऑटोमेशन शटल रैकिंग, डिजिटल ऑपरेशन, एआई और एमएल आधारित प्लानिंग, और ग्राहकों के लिए ओम्नीचैनल सेवाएं उपलब्ध हैं। उन्होंने आगे बताया, ह्लहमारे नेट जीरो लक्ष्यों के अनुरूप, सानंद-भिवंडी मार्ग पर 25% कार्गो अब वैकल्पिक ईंधन से चलता है, जिससे ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कमी और संचालन क्षमता में बढ़ोतरी हुई है। हमारी लॉजिस्टिक्स टीम नेऑपरेशंस कमांड हब और लॉजिस्टिक्स ऑपरेशंस कॉम्पिटेंस सेंटर की स्थापना की है, ताकि लॉजिस्टिक्स में स्थायित्व को और मजबूती से लागू किया जा सके। यह उपलब्धि नेस्ले इंडिया और उसके लॉजिस्टिक्स साझेदारों की निरंतर साझेदारी के कारण संभव हो पाई है। कंपनी इस साझेदारी के तहत सानंद-भिवंडी मार्ग पर वैकल्पिक ईंधन वाले वाहनों की तादाद बढ़ाती रहेगी।

सरकार की भूमि और खनिज संसाधनों का नुकसान करने का आरोप

वसई/विरार (उत्तरशक्ति)। वसई-विरार नगर निगम के बोर्ड अधिकारी अभिजीत बागड़े पर सरकार की भूमि और खनिज संसाधनों का नुकसान करने का आरोप लगाया गया है। महेश सरवणकर, भारतीय जनता पार्टी के वसई रोड मंडल के अध्यक्ष, ने यह दावा किया है कि अभिजीत बागड़े ने सरकार को झूठी रिपोर्ट पेश करके लघु खनिज घोटाला किया है। विशेष रूप से, नालासोपारा के पश्चिम स्थित गांव मौजे आचोले में भू-संपत्ति सर्वे क्रमांक 46 पर मिट्टी भरने के मामले में बागड़े का कथित रूप से माफियाओं का साथ देना और उन्हें संरक्षण देना गंभीर आरोप हैं।

आरोप है कि बागड़े के समर्थन से डेवलपर्स ने अवैध रूप से भारी मात्रा में मिट्टी भराई की है, जिससे न केवल पर्यावरणीय समस्याएं उत्पन्न हुईं, बल्कि सरकार को रॉयल्टी के रूप में करोड़ों का नुकसान हुआ है। इसके साथ ही, इस मिट्टी भराई के कारण मानसून के मौसम में आसपास के शहरी क्षेत्रों में जलभराव की संभावना बढ़ सकती है, जिससे जन जीवन प्रभावित होगा।

महेश सरवणकर ने इस पूरे मामले की जांच की मांग की है और कहा है कि इस प्रकार के घोटाले से सरकार को भारी नुकसान हो रहा है। उनका आरोप है कि बोर्ड अधिकारी अभिजीत बागड़े की लापरवाही और सहयोग से यह सब संभव हुआ है।

बोईसर-पालघर में ट्रेनों के ठहराव को लेकर भाजपा कार्यालय में विशेष बैठक आयोजित

पालघर(उत्तरशक्ति/अजीत सिंह)। भारतीय जनता पार्टी, रेलवे प्रवासी प्रकोष्ठ, महाराष्ट्र द्वारा भाजपा कार्यालय, पालघर में एक अहम बैठक आयोजित की गई, जिसमें बोईसर और पालघर स्टेशन पर ट्रेनों के ठहराव को लेकर चर्चा की गई। इस बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में कैलाश वर्मा, प्रदेश अध्यक्ष (रेलवे प्रवासी प्रकोष्ठ, महाराष्ट्र) उपस्थित रहे। बैठक में बोईसर स्टेशन प्रमुख सलाहकार तुलसीराम केवट, भाजपा नेता प्रशांत पाटील, कुणाल संखे, रोहित राऊत, संकेत ठाकुर, सदानंद नंदू, तेजराज हजारी सहित कई अन्य पदाधिकारी भी मौजूद थे। बैठक का मुख्य उद्देश्य उत्तर प्रदेश, बिहार, गुजरात और राजस्थान जाने

वाली लंबी दूरी की ट्रेनों को बोईसर और पालघर स्टेशनों पर ठहराने की मांग को लेकर रणनीति बनाना था। तुलसीराम केवट ने बैठक के दौरान विशेष रूप से गाजीपुर-बांद्रा ट्रेन के बोईसर और पालघर स्टेशनों पर ठहराव की मांग उठाई। उन्होंने बताया कि इन क्षेत्रों से बड़ी संख्या में उत्तर भारतीय प्रवासी रहते हैं, ऐसे में ट्रेनों का ठहराव यहाँ बेहद जरूरी है। इस मौके पर मुख्य अतिथि कैलाश वर्मा ने आश्वासन दिया कि रेलवे विभाग से लगातार संपर्क में हैं और बोईसर व पालघर रेलवे स्टेशन पर जल्द ही दो ट्रेनों के ठहराव की संभावना बन रही है।

वीआईटी-एपी यूनिवर्सिटी ने भारत का सबसे ऊंचा अकादमिक ब्लॉक खोला

मुंबई (उत्तरशक्ति)। वीआईटी-एपी यूनिवर्सिटी ने भारत के सबसे ऊंचे अकादमिक ब्लॉक महात्मा गांधी अकादमिक ब्लॉक के भव्य उद्घाटन किया है। महात्मा गांधी अकादमिक ब्लॉक, 45 मीटर ऊंचा और 7.68 लाख वर्ग फीट में फैला हुआ है, जो मॉडर्न आर्किटेक्चर और एजुकेशनल इनोवेशन का एक प्रमाण है। इस अत्याधुनिक सुविधा में एडवांस्ड क्लासरूम्स, लेक्चर हॉल्स, गैलरी स्पेस और 700 सीटों वाला ऑडिटोरियम शामिल हैं। भारत की नंबर 1 मूवी इवेंट और प्रमोशनल कंपनी श्रेयस मीडिया ने इस कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन किया।

आंध्र प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री नारा चंद्रबाबू नायडू ने हाल ही में महात्मा गांधी अकादमिक ब्लॉक, और नए पुरुष और महिला हॉस्टल ब्लॉकों का उद्घाटन किया, जिनके नाम हैं वीवी गिरी ब्लॉक (2.31 लाख वर्ग फुट), आचार्य एनजी रंगा ब्लॉक (2.26 लाख वर्ग फुट), और दुगार्बाई देशमुख ब्लॉक (2.26 लाख वर्ग फुट)।

संस्थापक और कुलाधिपति डॉ. जी. विश्वनाथन ने कहा, ह्मुख्यमंत्री श्री नारा चंद्रबाबू नायडू के दृष्टिकोण पर आधारित यह उद्घाटन अमरावती को ग्लोबल नॉलेज और इनोवेशन हब बनने की दिशा में आगे बढ़ाता है। नए उद्घाटन किए गए ब्लॉक और वी-लॉन्चपैड 2025 पहल प्रतिभा को आगे बढ़ने, एंटरप्रेन्योरशिप को बढ़ावा देने और एजुकेशनल

एक्सीलेंस को आगे बढ़ाने के लिए हमारे अटूट समर्पण की पुष्टि करते हैं। उन्होंने वी-लॉन्चपैड-2025 (ग्लोबल इनोवेटर्स चैलेंज) भी लॉन्च किया। माननीय मुख्यमंत्री ने 2016 में वीआईटी-एपी यूनिवर्सिटी के सेंट्रल ब्लॉक की आधारशिला रखी थी। उनकी गरिमामयी उपस्थिति वीआईटी-एपी यूनिवर्सिटी की अकादमिक एक्सीलेंस और इनोवेशन की निरंतर खोज में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

वी-लॉन्चपैड 2025, एक वैश्विक इनोवेटर्स चैलेंज है, जिसे वीआईटी-एपी स्कूल ऑफ बिजनेस (वीएसबी), इनोवेशन इनक्यूबेशन एंड एंटरप्रेन्योरशिप सेल (आईआईईसी) और वीआईटी-एपी टेक्नोलॉजी बिजनेस इनक्यूबेशन फाउंडेशन (वीटीबीआईएफ) द्वारा आयोजित किया जाता है। यह उभरते एंटरप्रेन्योर्स को मेंटरशिप और इनक्यूबेशन सहायता के साथ इनोवेटिव बिजनेस कॉन्सेप्ट को प्रस्तुत करने के लिए एक प्लेटफार्म प्रदान करता है। वी-लॉन्चपैड, छात्रों और स्टार्टअप के बीच इनोवेशन, एंटरप्रेन्योरशिप और लीडरशिप को बढ़ावा देने के लिए डिजाइन की गई एक अभूतपूर्व पहल है।

वेल्लोर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी - आंध्र प्रदेश (वीआईटी-एपी यूनिवर्सिटी), 44 लाख वर्ग फीट के निर्मित क्षेत्र के साथ सबसे बड़ा इंटिट्यूशन है, जो अमरावती, आंध्र प्रदेश में स्थित है। यह हायर एजुकेशन का एक लीडिंग इंस्टीट्यूशन है, जो अपने वर्ल्ड क्लास इंफ्रास्ट्रक्चर, ग्लोबल ऐकडेमिक कोलाब्रेशन और इनोवेशन के प्रति प्रतिबद्धता के लिए जाना जाता है। सर्वपल्ली राधाकृष्णन ब्लॉक, एपीजे अब्दुल कलाम ब्लॉक और हाल ही में खोले गए महात्मा गांधी, वी. वी. गिरी, आचार्य एन. जी. रंगा और दुगार्बाई देशमुख ब्लॉक सहित आधुनिक सुविधाओं के साथ, विश्वविद्यालय समग्र शिक्षा और अत्याधुनिक शोध के माहौल को बढ़ावा देता है।

स्कोडा ऑटो फॉक्सवैगन इंडिया में नेतृत्व परिवर्तन

मुंबई। स्कोडा ऑटो फॉक्सवैगन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (एसएवीडब्ल्यूआईपीएल) ने आज एक महत्वपूर्ण नेतृत्व परिवर्तन की घोषणा की है। इस बदलाव के तहत श्री आशीष गुप्ता को 1 मई 2025 से प्रभावी रूप से स्कोडा इंडिया का नया ब्रांड डायरेक्टर नियुक्त किया गया है। वर्तमान में वे फॉक्सवैगन पैसेंजर कार्स के ब्रांड डायरेक्टर हैं। इसी तरह, श्री नितिन कोहली, जो वर्तमान में ऑडी इंडिया में सेल्स और ऑपरेशंस की जिम्मेदारी संभाल रहे हैं, अब 1 मई 2025 से फॉक्सवैगन पैसेंजर कार्स के ब्रांड डायरेक्टर के रूप में कार्यभार ग्रहण करेंगे। श्री आशीष गुप्ता श्री पीटर जानेबा की जगह लेंगे, जिन्होंने भारत में अपने सफल कार्यकाल के बाद अब स्कोडा ऑटो, चेक गणराज्य लौटने का निर्णय लिया है। 2004 से स्कोडा परिवार का हिस्सा रहे श्री जानेबा ने भारत में ब्रांड की स्थिति को मजबूत करने और ग्राहक-केंद्रित ग्रोथ स्ट्रैटजी को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। श्री आशीष गुप्ता को ऑटोमोबाइल क्षेत्र में दो दशकों से अधिक का अनुभव है, जिनमें से 12 वर्षों से अधिक उन्होंने फॉक्सवैगन समूह में विभिन्न भूमिकाओं में कार्य किया है, जिनमें 5 वर्ष भारत में फॉक्सवैगन ब्रांड का नेतृत्व शामिल है। अपने नए दायित्व में वह स्कोडा की ग्रोथ स्ट्रैटजी को गति देने, ग्राहकों के विश्वास को गहराई से जोड़ने, नेटवर्क को मजबूत करने और ब्रांड की प्रभावी उपस्थिति बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करेंगे। श्री नितिन कोहली के पास ऑटोमोबाइल बिक्री क्षेत्र में 25 वर्षों से अधिक का अनुभव है, जिसमें से 12 साल से अधिक उन्होंने स्कोडा ऑटो फॉक्सवैगन इंडिया के साथ काम किया है। बिजनेस डेवलपमेंट, स्ट्रैटजिक प्लानिंग और विभागीय समन्वय में उनकी विशेषज्ञता फॉक्सवैगन ब्रांड को भारत में नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने में सहायक होगी। यह बदलाव कंपनी की इस सोच को दृढ़ता से दर्शाता है कि भारतीय प्रतिभा को पहचान कर उन्हें नेतृत्व के अवसर दिए जाएं, जिससे वे स्थानीय बाजार की बदलती जरूरतों को बेहतर समझते हुए वैश्विक ब्रांड्स का नेतृत्व कर सकें।

श्री पीयूष अरोड़ा, सीईओ और एमडी, एसएवीडब्ल्यूआईपीएल ने कहा, नेतृत्व में यह बदलाव हमारे संगठन के भारतीय ढांचे में स्थानीयकरण और क्षमता निर्माण के प्रति हमारी सतत प्रतिबद्धता को दशार्ता है।

मजबूत भारतीय नेतृत्व को सशक्त बनाना हमारी ग्रोथ स्ट्रैटजी का एक मुख्य स्तंभ है, जो हमें तेज, प्रासंगिक और ग्राहकों व व्यापारिक परिवेश की बदलती जरूरतों के अनुरूप बनाता है। आशीष और नितिन अपनी रणनीतिक समझ और बाजार की गहरी जानकारी के साथ स्कोडा और फॉक्सवैगन ब्रांड्स को भारत में अगले विकास चरण में सफलतापूर्वक आगे ले जाएंगे।

उत्तरशक्ति
* संपादकः ओमप्रकाश प्रजापति
* उप संपादकः प्रेम चंद मिश्रा
*प्रबंध संपादकः डा. शेषधर बिन्द
उपरोक्त सभी पद अवैतनिक है।
पत्राचार कार्यालय:
उत्तरशक्ति (हिंदी दैनिक)
मुंबई-पूणे मोटर मालक श्रमजीवन प्रिमायसेस को.सो., बी-5, ए-337 ट्रक टर्मिनल डब्लू.टी.टी. रोड, आर.टी.ओ. जवल ऑटाफ हिल वडाला, मुंबई-37
मो.- 9554493941
email ID- uttarshaktinews@gmail.com

स्वामी: शरद फागूराम प्रजापति, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक ओमप्रकाश रविंद्रनाथ प्रजापति द्वारा सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, यूनिट क्रमांक 4, तल मजला, एन.के. इंडस्ट्रियल स्टेट, आरे रोड, प्रवासी इंडस्ट्रियल एस्टेट, जवल, गेट क्रमांक 2, गोरेगांव (पूर्व), मुंबई-400063, महाराष्ट्र से मुदित एवं के-4, रूम नं. 8, ग्राउंड फ्लोर न्यू समता सहकारी को.ऑ. हां. सोसाइटी, एमएमआरडीए कॉलोनी कंजूरमार्ग (वेस्ट), जिला मुंबई- 400078, महाराष्ट्र से प्रकाशित। RNI NO. MAHHIN/2018/76092 * संपादक- ओमप्रकाश रविंद्रनाथ प्रजापति, समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के लिए उत्तरदाई तथा इससे उत्पन्न समस्त विवाद मुंबई न्यायालय के अधीन होंगे।
पत्राचार कार्यालय: मुंबई-पूणे मोटर मालक श्रमजीवन प्रिमायसेस को.सो., बी-5 ए-337 ट्रैक टर्मिनल, डब्लू.टी.टी. रोड, आर.टी.ओ. जवल, ऑटाफ हिल, वडाला मुंबई -37, मो.- 9554493941 email ID- uttarshaktinews@gmail.com

जौनपुरःचकबंदी कार्यों एवं पांच वर्ष से अधिक समय से लंबित वादों की समीक्षा बैठक

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। जिलाधिकारी डॉ0 दिनेश चंद्र की अध्यक्षता में उप संचालक चकबंदी मुख्यालय लखनऊ आलोक कुमार, चकबन्दी अधिकारी उल्फान अली एवं संजय सिंह कनौजिया के द्वारा चकबंदी कार्यों एवं पांच वर्ष से अधिक समय से लंबित वादों की समीक्षा कलेक्ट्रेट सभागार में की गई।बैठक में जनपद में सर्वे, कब्जा परिवर्तन एवं तरमीम स्तर पर लंबित कार्यों की समीक्षा करते करते हुए स्पष्ट निर्देश दिया गया कि जो गांव सर्वे/तरमीम स्तर पर लंबित है, उनमें कठोर परिश्रम करते हुए निर्धारित लक्ष्य के अनुसार से समय कार्य पूर्ण करें, यदि समय से कार्य पूर्ण नहीं

होता है तो सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों का उत्तरदायित्व निर्धारित किया जाएगा। साथ ही समस्त न्यायालय लिपिक को भी निर्देशित किया गया कि समस्त वाद सीसीसीएमएस प्रणाली के अंतर्गत ऑनलाइन करके काज लिस्ट के अनुसार वादों की सुनवाई करवाना सुनिश्चित करें।

जिलाधिकारी ने चकबंदी अधिकारीगणों को चेतावनी देते हुए निर्देशित किया गया कि मा0 उच्च न्यायालय से आच्छादित वादो एवं 05 वर्ष से अधिक लम्बित वादों का निस्तारण करना सुनिश्चित करें। जिससे शासन की मंशानुसार कार्य पूर्ण किया जा सके। जिलाधिकारी द्वारा लेखपालों को निर्देशित किया कि चकबन्दी कार्य में किसी भी प्रकार की समस्या उत्पन्न हो रही है तो अवगत कराये जिसका त्वरित गति से निस्तारण किया जायेगा।इस अवसर पर मुख्य राजस्व अधिकारी/डीडीसी अजय अम्बष्ट, एसओसी अशोक कुमार, पवन कुमार सिंधु एवं समस्त चकबंदी अधिकारी, सहायक चकबंदी अधिकारी, चकबंदीकर्ता और चकबंदी लेखपाल उपस्थित रहे।

आशीर्वाद अब बिहार में अपने फ्रेश डेयरी प्रोडक्ट्स की रेंज को और भी किया मजबूत

दरभंगा। पूर्वी भारत का लोकप्रिय डेयरी ब्रांड आशीर्वाद, अब बिहार में अपने फ्रेश डेयरी प्रोडक्ट्स की रेंज को और भी मजबूत करते हुए मसाला छाछ 10 रुपये के किफायती दाम पर लेकर आया है। गर्मियों की शुरूआत मे यह नई पेशकश एकदम सही समय पर आई है, जो स्वाद और ताजगी का बढ़िया मेल पेश करती है। आशीर्वाद ने इस खास लॉन्च के साथ एक बार फिर दिखाया है कि वो अपने उपभोक्ताओं को बढ़िया क्वालिटी, किफायती दाम, भरोसा और अनोखा स्वाद देने के लिए पूरी तरह से समर्पित है। आशीर्वाद मसाला छाछ खासतौर पर बिहारी स्वाद के लिए स्थानीय स्तर मे ही तैयार किया गया है, जिस से आपको मिले ताजगी भरा घर जैसा एहसास। छाछ मे जीरा, काली मिर्च और काले नमक जैसे मसालों का स्वादिष्ट मिश्रण किया गया है।

संत निरंकारी मिशन ब्रांच मेहनाजपुर के द्वारा अग्नि पीड़ित परिवार की गई सहायता

मोहम्मद आरिफ

सिधौना, आजमगढ़(उत्तरशक्ति)। आज संत निरंकारी मिशन ब्रांच मेहनाजपुर के द्वारा मेहनाजपुर थाना के अंतर्गत सिधौना ग्राम निवासी अजय राम के घर जाकर चावल, गेहूं ,आटा, सरसों का तेल, चीनी,बर्तन एवं 2500 धनराशि पीड़ित परिवार को देकर सहायता की गई ।बताते चले कि अजय राम का घर 24 अप्रैल को भीषण अग्नि में सब जल गया था ।इनके पास कुछ भी नहीं बचा था जिसकी सहायता के लिए हर क्षेत्र के ग्रामीण सामने आ रहे हैं,और कुछ ना कुछ सहायता पीड़ित परिवार को दी जा रही है ।जिसमें समाजसेवी वैभव सिंह हैप्पी के द्वारा भी लगातार सहायता दी जा रही है ।जिससे पूरे क्षेत्र में इनके उत्तम कार्य की भरपूर सराहना की जा रही है ।यदि ऐसे सभी लोग इस प्रकार का कार्य करें तो गरीबों की सहायता के साथ साथ एक उत्तम समाज का निर्माण हो सकेगा। इसी कड़ी में संत निरंकारी के लोग भी कार्य कर रहे हैं ।जिनका लोग बहुत प्रसन्नता पूर्वक सराहना कर रहे हैं। इस अवसर पर संत निरंकारी मिशन ब्रांच मेहनाजपुर के अध्यक्ष राजेश सिंह, समाजसेवी वैभव सिंह घनश्याम सिंह हैप्पी हरिकेश,राजनाथ, राधेश्याम इत्यादि लोगों उपस्थित रहे इन सभी के उत्तम कार्य के लिए पूरे क्षेत्र में भरपूर सराहना की जा रही है।

पॉली और ग्रीन हाउस में बेमौसम सब्जियों और फूलों की खेती कर सकतें है किसान

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। जिला उद्यान अधिकारी डॉ0 सीमा सिंह राणा ने अवगत कराया है कि पाली हाउस एवं ग्रीन हाउस 500 वर्ग0मी0 से 2500 वर्ग0मी0 तक के निर्माण के लिए उद्यान विभाग देगा 50 प्रतिशत तक का अनुदान। सरकार की एकीकृत बागवानी विकास मिशन योजना किसानों की आय में बढ़ोतरी करेगी। उनकी आर्थिक स्थिति सुधरेगी। इस योजना के तहत किसानों को फूल और सब्जियों की उन्नत खेती के लिए तकनीकी सहायता के साथ-साथ अनुदान भी दिया जाएगा। इसका उद्देश्य बागवानी क्षेत्र को प्रोत्साहित कर कृषि आय में वृद्धि करना है। इस योजना के तहत किसानों को पॉली और ग्रीन हाउस निर्माण पर लागत का 50 प्रतिशत तक का अनुदान उपलब्ध कराया जाएगा। इससे किसान अब बेमौसम सब्जियों और फूलों की खेती कर सकेंगे, जिससे बाजार में उनकी मांग बनी रहेगी और आय में वृद्धि होगी। यह योजना उन किसानों के लिए लाभकारी होगी जो कम क्षेत्रफल में उच्च आय चाहते हैं। उन्होंने बताया कि इस योजना के माध्यम से जिले में उन्नत किस्म के फूलों जैसे गुलाब, जरबेरा के साथ-साथ टमाटर, शिमला मिर्च, खीरा की खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। इससे न केवल किसानों की आमदनी बढ़ेगी, बल्कि स्थानीय स्तर पर फूलों और सब्जियों की उपलब्धता भी सुनिश्चित होगी। इस योजना का किसान अधिक से अधिक लाभ उठाएं और इससे सम्बन्धित जानकारी के लिए किसी भी कार्य दिवस मे जिला उद्यान अधिकारी कार्यालय मे आधार, खतौनी, फोटो व बैंक पासबुक फोटोकापी के साथ सम्पर्क कर सकते है।

हाई कोर्ट के आदेश पर गरजा बुलडोजर

बदलापुर, जौनपुर (उत्तरशक्ति)। कोतवाली क्षेत्र के कस्तूरीपुर गांव में मंगलवार को हाईकोर्ट के आदेश पर बदलापुर के तहसीलदार राकेश कुमार तथा राजस्व विभाग टीम की मौजूदगी में सरकारी चकमार्ग पर बने अवैध मकान को बुलडोजर से गिरवाते हुए अतिक्रमण को हटवाया गया। बता दे कि गांव निवासी हरिश्चंद्र निषाद द्वारा हाईकोर्ट में अपील किया गया कि गांव के चकमार्ग पर भगवान दीन निषाद द्वारा जबरन मकान बनवाया गया इसके कारण आने जाने का रास्ता बंद हो गया। वहीं इसी रास्ते के चलते करीब 2 महीने पूर्व दो पक्षों में जमकर मारपीट हुई थी ।उक्त मामले को संज्ञान में लेते हुए हाईकोर्ट के आदेश व डीएम के निर्देश पर तहसीलदार राकेश कुमार द्वारा राजस्व विभाग तथा पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचकर चक मार्ग पर बने मकान को बुलडोजर से ध्वस्त करवा दिए।

वाराणसी में ट्रेन से कटकर अधेड़ ने की आत्महत्या,परिवार जनों में छाया मातम

वाराणसी (उत्तरशक्ति)। जनपद के फरीदपुर रिंग रोड अंडरपास के पास मंगलवार सुबह एक अधेड़ व्यक्ति ने ट्रेन से कटकर आत्महत्या कर ली। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। घटना के बाद परिजनों में कोहराम मच गया ।घटना सुबह लगभग चार बजे की है। औड़िहार से वाराणसी सिटी स्टेशन की ओर आ रही स्वतंत्रता सेनानी एक्सप्रेस के आने से पहले विजय यादव (48), निवासी बरीयासनपुर थाना चौबेपुर, रेलवे ट्रैक पर लेट गया। ट्रेन गुजरने पर उसकी मौके पर ही मौत हो गई। मृतक के छोटे भाई संजय यादव ने बताया कि विजय ऑटो चालक था और काफी समय से नशे का आदी था। सोमवार रात करीब 12 बजे वह घर से अचानक निकल गया था। सुबह उसकी मौत की सूचना मिलने पर परिवार में कोहराम मच गया। विजय अपने पीछे पत्नी शीला देवी, 22 वर्षीय बेटा और 21 वर्षीय विवाहित बेटी को छोड़ गया है। परिवार के अनुसार वह मानसिक रूप से भी परेशान रहता था। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है कि आत्महत्या के पीछे क्या कारण थे।

नि:शुल्क शीतल पेयजल प्याऊ का क्षेत्राधिकारी ने किया उद्घाटन, गर्मी में राहगीरों को मिलेगा राहत

-विशाल सोनी

शाहगंज, जौनपुर (उत्तरशक्ति)। नगर की अग्रणी सामाजिक संस्था जेसीआई शाहगंज सिटी ने भीषण गर्मी के मद्देनजर राहगीरों की प्यास बुझाने के लिए जेसीज चौक स्थित जेसीज6 बूथ पर निःशुल्क शीतल पेयजल प्याऊ की शुरूआत की।इस पुण्य कार्य का शुभारंभ क्षेत्राधिकारी अजीत सिंह चौहान ने फीता काटकर किया। उन्होंने संस्था के इस मानवीय प्रयास की भूरि-भूरि प्रशंसा की और भविष्य में स्थायी प्याऊ लगाने के लिए प्रेरित किया। संस्था की अध्यक्ष दीपा सेठ ने बताया कि चिलचिलाती गर्मी में प्यासे को पानी पिलाना सबसे बड़ा धर्म है। इसी भावना के तहत संस्था के पूर्व अध्यक्ष रविकांत जायसवाल की माता स्व. प्रमीला देवी की पुण्य स्मृति में प्रतिवर्ष प्याऊ की व्यवस्था की जाती है।विशिष्ट अतिथि प्रदीप जायसवाल ने संस्था के सामाजिक योगदान की सराहना की। पूर्व अध्यक्ष रविकांत जायसवाल ने बताया कि प्याऊ गर्मी भर चलेगा और राहगीरों को राहत देता रहेगा।कार्यक्रम संयोजक कार्तिक अग्रहरि ने सभी आगंतुकों और सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया।कार्यक्रम में पूर्व अध्यक्ष दीपक जायसवाल, सौरभ सेठ, निर्भय जायसवाल, राम अवतार अग्रहरि, सचिव आदित्य गुप्ता, वीरेंद्र जायसवाल, कोषाध्यक्ष उज्जवल सेठ, रोहित गुप्ता, अमृता जायसवाल, देवी प्रसाद चौरसिया मंटू, नवीन मोदनवाल, सर्वेश अग्रहरि, जेजे सचिव आयुष अग्रहरि सहित तमाम जेसी सदस्यों की उपस्थिति रही।

संदिग्ध परिस्थितियों में महिला की मौत,सूचना पर पहुंची पुलिस

जौनपुर(उत्तरशक्ति)। बक्शा थाना क्षेत्र के डीहजह्निया गांव में सोमवार की रात संदिग्ध परिस्थितियों में 23 वर्षीय महिला की मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेते हुए पोस्टमार्टम हाउसभेज दिया। डीहजह्निया गांव निवासी विकास प्रजापति की पत्नी खुशबू प्रजापति की तबीयत शाम को अचानक खराब हो गई। परिवार वाले को प्राइवेट अस्पताल ले गए। जहां चिकित्सक उसे सदर अस्पताल ले जाने की सलाह दी। परिजन खुशबू को जिला अस्पताल में भर्ती करवाए जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। थानाध्यक्ष लक्ष्मण विक्रम सिंह ने बताया कि शव को कब्जे में ले लिया गया है। मंगलवार को उसके शव का पोस्टमार्टम कराया गया।

शाहगंज पड़ाव पर जर्जर विद्युत पोल गिरने से यातायात बाधित, राहगीरों को हो रही परेशानी

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। नगर क्षेत्र के शाहगंज पड़ाव स्थित पानी की टंकी के पास मंगलवार तड़के एक जर्जर विद्युत पोल अचानक धराशायी हो गया। जिससे क्षेत्र में यातायात पूरी तरह बाधित हो गया है।स्थानीय सूत्रों के अनुसार, उक्त विद्युत पोल काफी दिनों से जर्जर अवस्था में था, जिसकी सूचना संबंधित विभाग को कई बार दी गई थी। बावजूद इसके कोई आवश्यक कार्रवाई नहीं की गई। सोमवार सुबह अचानक पोल गिरने से मार्ग पूरी तरह अवरुद्ध हो गया। जिससे राहगीरों और स्थानीय निवासियों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। विद्युत पोल के गिरने से न

सिर्फ यातायात प्रभावित हुआ है, बल्कि क्षेत्र की बिजली आपूर्ति भी बाधित हो गई है। लोग विभागीय लापरवाही को लेकर नाराजगी जता रहे हैं और जल्द से जल्द मार्ग बहाल करने की मांग कर रहे हैं ।प्रशासन और बिजली विभाग की टीम मौके पर पहुंचकर स्थिति का जायजा ले रही है और पोल हटाने का कार्य शुरू कर दिया गया है। अनुमान है कि कुछ घंटों में यातायात व्यवस्था सामान्य हो सकती है।

शाहगंज पुलिस ने अपहरण के वांछित आरोपी को किया गिरफ्तार

शाहगंज, जौनपुर(उत्तरशक्ति)। डा0 कौस्तुभ पुलिस अधीक्षक जनपद जौनपुर द्वारा जनपद में अपराध की रोकथाम एवं अपराधियों की गिरफ्तारी हेतु चलाए जा रहे ।अभियान में अपर पुलिस अधीक्षक नगर जौनपुर आयुष श्रीवास्तव एवं क्षेत्राधिकारी शाहगंज अजीत सिंह चौहान के निर्देशन व निकट पर्वेक्षण में थाना स्थानीय पर पंजीकृत मु0अ0स0 146/2025 धारा 137(2),87 भारतीय न्याय संहिता 2023 में वांछित आरोपी विवेक राजभर पुत्र सर्वजीत राजभर निवासी ताखा पश्चिम थाना शाहगंज जौनपुर को आज 06.05.2025 को समय 07:25 बजे रेलवे स्टेशन शाहगंज से गिरफ्तार किया गया तथा पीड़िता को बरामद किया गया। आवश्यक विधिक कार्यवाही कर सम्बन्धित न्यायालय भेजा जा रहा है ।

टायर फटने से ट्रेलर हाइवे पर पलटा,मची अफरा तफरी

-धर्मेंद्र कुमार शर्मा

बदलापुर, जौनपुर (उत्तरशक्ति)। सिंगरामऊ थाना क्षेत्र में मंगलवार को एक बड़ा हादसा हुआ। मिश्रौली गांव स्थित राष्ट्रीय राजमार्ग 731 पर सुल्तानपुर की तरफ से आ रहा एक ट्रेलर अनियंत्रित होकर पलट गया। हादसे का कारण ट्रेलर का आगे का टायर फटना था। टायर फटने के बाद ट्रेलर डिवाइडर से टकराकर पलट गया। घटना से मार्ग के दोनों तरफ यातायात बाधित हो गया। हादसे में ट्रेलर चालक श्याम शुक्ला केबिन में फंस गए। स्थानीय लोगों ने रेलवे स्टेशन से क्रेन मंगवाकर चालक को बाहर निकाला। घायल चालक भदोही का रहने वाला है। उसे एंबुलेंस से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बदलापुर ले जाया गया। चिकित्सकों के अनुसार चालक की स्थिति अभी स्थिर नहीं है। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर ट्रेलर से गिरे लोहे के पतरों को हटवाया। इसके बाद सड़क पर यातायात फिर से शुरू हो सका।

भोजूबीर में करंट की चपेट में आने से पति-पत्नी और पिता की दर्दनाक मौत

वाराणसी(उत्तरशक्ति)। कैंट थाने के अर्दली बाजार चौकी अंतर्गत भोजूबीर सब्जी मंडी के पास एक घर में बिजली के करंट की चपेट में आने से एक- एक कर तीन लोगों की मौत हो गई।मिली जानकारी के अनुसार, प्रीति जायसवाल (28) नहाने के बाद लोहे की तार से बने हेंगर पर कपड़ा फैलाने गई थी। इस बीच वाटर पंप (टुल्लू) का तार कहीं से लोहे के हेंगर के संपर्क में आ गया। अचानक बिजली का झटका लगने से प्रीति छटपटाने लगी। यह देख पति सोनू जायसवाल (30) भी पहुंचा। पत्नी को बचाने के चक्कर में सोनू भी करंट की चपेट मे आ गया। सोनू के पिता राजेंद्र जायसवाल (65) ने भी उन्हें बचाने की कोशिश की। लेकिन वह भी करंट की चपेट में आ गए। तीनों की मौके पर ही मौत हो गई। सोनू और प्रीति की दो छोटी बेटियां शिवांगी (09) कक्षा एक में पढ़ती है, जो घटना के समय स्कूल में थी। दूसरी बेटी नैंसी (04) हैं। मौके पर चौकी प्रभारी पहुंचे और घटना की जानकारी ली।

काशी में विदेशी पर्यटक का हाई वोल्टेज ड्रामा, चर्च के ऊपर चढ़ घंटो तक छकाता रहा प्रशासन को

डॉ.एस.के.मिश्रा

वाराणसी(उत्तरशक्ति)।जनपद में गिरजाघर स्थित चर्च के ऊपर एक विदेशी पर्यटक मंगलवार को चढ़ गया। कड़ी मशक्कत के बाद उसे उतारा गया। पूछताछ में उसने बताया कि फरवरी में वह महाकुंभ मेले में गया, वहां से अयोध्या फिर काशी आया। यहां किसी होटल में रुका हुआ है।पुलिस के अनुसार नशे में होने के चलते वह गिरजाघर के ऊपर चढ़ा था। उसने पूछताछ में अपना नाम एलेक्सजेंडर बताया है। चर्च से उसको उतारने के लिए फायर ब्रिगेड के जवान पहुंचे और उसे सकुशल

गिरजाघर के ऊपर से उतार कर नीचे ले आए।एसीपी दशाश्वमेध डॉ. अतुल अंजान त्रिपाठी ने बताया कि एक एक व्यक्ति गिरजाघर के ऊपर चढ़ गया था, जिसको पुलिस प्रशासन की टीम और फायर ब्रिगेड की टीम ने सकुशल नीचे उतारा। इसके हाव-भाव से यह लग रहा है कि यह नशे में है। जिसके कारण ठीक से बता नहीं पा रहा है। इससे गहनता से पूछताछ की जाएगी। दशाश्वमेध एसीपी डॉ अतुल अंजान त्रिपाठी दशाश्वमेध थाना प्रभारी विजय कुमार शुक्ला, समस्त चौकी इंचार्ज, कांस्टेबल अनुज कुमार कांस्टेबल राजन सिंह अपने हमराहियों के साथ मौके पर मौजूद रहे।

अंधे साधु की गला रेतकर हत्या, पुलिस कर रही छानबीन

गाजीपुर(उत्तरशक्ति)। सदर कोतवाली क्षेत्र के कोठवा गांव में सोमवार देर रात अज्ञात दरिंदों ने 50 वर्षीय दृष्टिहीन साधु रामनगीना यादव की बेरहमी से गला रेतकर हत्या कर दी। साधु गांव की एक आटा चक्की के बाहर सोए हुए थे, जहां रात के अंधेरे में उन पर जानलेवा हमला किया गया।बताया जा रहा है कि मृतक बचपन से ही दोनों आंखों से अंधे थे और मंदिर में पूजा-पाठ कर, गांव में भिक्षा मांगकर जीवन यापन करते थे। कुछ माह पहले मां की मौत के बाद वे अकेले रहने लगे थे। हत्या के वक्त आटा चक्की का मालिक अंदर सो रहा था। चीख-पुकार सुनकर जब वह बाहर निकला तो साधु खून से सना मृत पड़े थे। गांव में चीख-पुकार मच गई और तुरंत पुलिस को सूचना दी गई।पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शव को कब्जे में लिया और पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा। कोतवाली प्रभारी दीनदयाल पांडेय ने बताया कि हत्या का मुकदमा दर्ज कर लिया गया है, मामले की जांच जारी है।

तेजीबाजार पुलिस तमंचा कारतूस के साथ एक आरोपी को किया गिरफ्तार

जौनपुर (ऊत्तरशक्ति)। पुलिस अधीक्षक जनपद जौनपुर द्वारा अपराध एवं अपराधियो विरूद्ध चलाये जा रहे ।विशेष अभियान के क्रम में अपर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण के निर्देशन व क्षेत्राधिकारी सदर के पर्यवेक्षण में थाना तेजीबाजार पुलिस टीम द्वार ऊदपुर नहर पुलिया के पास से अखिलेश रजक पुत्र रमाशंकर रजक निवासी ग्राम गोल्हना मऊ थाना सुजानगंज जनपद जौनपुर को गिरफ्तार किया गया। जिसके कब्जे से एक देशी तमंचा 315 बोर व एक जिंदा कारतूस 315 बोर बरामद हुआ। बरामदगी व गिरफ्तारी के आधार पर थाना स्थानीय पर मु0अ0सं0-51/2025 धारा-3/25 आर्म्स एक्ट पंजीकृत कर आवश्यक विधिक कार्यवाही की जा रही है।

सड़क किनारे व दुकानों के आगे कब्जा, बाजार में रोजाना लग रहा है जाम

शासन प्रशासन मौन, वाहन चालक व राहगीर हो रहे परेशान

सिधौना, आजमगढ़ (उत्तरशक्ति)। लालगंज सिधौना बाजार रोड के किनारे, चाट, समोसा, जलेबी, व सब्जी की दुकान ठेला लगाकर बेचने वाले दुकानदारों की वजह से आए दिन लग रहा है जाम, वही देखा जाये तो मनमाना तरीके से रोड के किनारे चार वाहिया, दो पहिया वाहन या ऑटो चालक हो सभी एक दूसरे से कम नहीं है। गलत पार्किंग लगाने के वजह से भी सिधौना बाजार चौराहे पर प्रतिदिन जाम लग रहा है। जिससे राहगीरों को आने-जाने में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। अब देखना यह है कि शासन प्रशासन कब इन पर कार्यवाही करता है।

गली में एक वर्ष से बंद खड़ी है गड्ढा खोदने वाली मशीन

जौनपुर (उत्तरशक्ति)।नगर के कालीकुत्ती परमानतपुर मोहल्ले में गंगा दोहरा वाले के गली के बाहर एक गैस पाइप डालने वाली मशीन पिछले एक वर्ष से लावारिश हाल में खड़ी है जिसकी खैर खबर लेने वाला कोई नहीं है। मशीन से पिछले वर्ष जुलाई 2024 में मैहर मंदिर से कालीकुत्ती मोहल्ले तक अंडरग्राउंड गैस पाइप डाली जा रही थी परंतु एक दिन अचानक मजदूर मशीन खड़ी कर गायब हो गए। कालीकुत्ती में उक्त गली में खड़ी लावारिश हाल में एक वर्ष से खड़ी है गैस पाइप की मशीन,जिससे हो रही है दुर्घटनाएं` इस मशीन के गली के बाहर खड़े होने पर गली के भीतर से आने वाले वाहन सवारों को सड़क पर आ रहे वाहन नहीं दिखाई देते जिस कारण पूर्व में दो दुर्घटनाएं भी हो चुकी है। इस मशीन के सड़क पर खड़े रहने से दो चार पहिया वाहन अगल बगल से नही गुजर सकते।यहां सड़क कम चौड़ी होने से अक्सर ऐसी स्थिति होती है जिसमें स्कूल बस व अन्य चार पहिया वाहन आमने सामने आ जाने से जाम की स्थिति हो जाती है। इस मशीन को हटाने हेतु प्रशासन से भी कई बार स्थानीय लोगों ने शिकायत की है लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। लोगों ने जिला प्रशासन से इस मशीन को हटवाने की मांग की है।इस और ध्यान आकृष्ट किया है।इस बाबत पूछे जाने पर इंडियन ऑयल अडानी गैस के एक कर्मचारी ने बताया कि ठेकदार द्वारा पेमेंट न करने पर मजदूर लौट गए हैं काम दूसरी साइड पर हो रहा है जल्दी ही इस गली का भी काम खत्म करने मशीन वहां से हटा ली जाएगी।

یسریٰ حکیمی دواخانہ
Regd.No20230048
युसरा हकीमी दवाखाना
हमारी कोशिश, आपका विश्वास...
उपलब्ध सुविधायें-
- गठिया व जोड़ो के दर्द का इलाज
- बवासीर का इलाज बगैर आपरेशन के
- चर्म रोग व पेट की तमाम बीमारियों का इलाज
- बालों का झड़ना, सफेद दाग मुहासे व छाइयों का इलाज होता है ।
- नि:संतान का अचूक इलाज
- शुगर कन्ट्रोल का इलाज

मंगलवार बंदी बाक़ी दिन का सुबह 10 बजे से रात 8 बजे तक
Mob.: 9198443844, 8960275665
नोट- पुरुषों व महिलाओं के गुप्त रोगों से सम्बन्धित सभी प्रकार के रोगों का ईलाज किया जाता है ।
अब हर जुमा को सुबह 10 बजे से 11 बजे तक
सफेद दाग के मरीजों को मुफ्त दवा मिलेगी यह सन् 2025 के अन्त तक जारी रहेगा।
पता- बड़ी मस्जिद, पूर्वी गेट के सामने जौनपुर (उ.प्र.)

गांव में एक ही दिन में तीन किसानों की मौत

सहारनपुर (उत्तरशक्ति)। गंगोह के खैरसाल गांव में मंगलवार का दिन दुखद समाचार लेकर आया। एक ही दिन में तीन किसानों की असमय मृत्यु हो गई। अचानक हुई इन मौतों ने पूरे गांव में शोक की लहर व्याप्त हो गई। इसमें एक बुजुर्ग की मौत टीवी देखते-देखते हुई। परिजनों ने बताया कि किसान जिले सिंह (82) हृदय रोगी थे, लेकिन फिलहाल वह पूरी तरह स्वस्थ थे। टीवी देखते समय अचानक कुर्सी से पीछे गिर पड़े। परिजनों ने जब उन्हें उठाया, तब तक उनकी सांसें थम चुकी थीं। सबसे चौंकाने वाली बात यह रही कि उनकी मृत्यु के समय भी उनके हाथ में टीवी का रिमोट था। इसके अलावा बाबूराम भाटी (50) और विनोद कुमार (52) की भी मामूली बीमारी के चलते मृत्यु हो गई। दोनों ही खेतिहर मजदूर थे और अपने परिवार का भरण-पोषण मेहनत-मजदूरी से करते थे। श्मशान घाट पर जैसे ही एक साथ तीन चिताएं जलीं, वहां मौजूद हर आंख नम हो उठी।

कमरे में लटकी मिली छात्रा की लाश

एटा (उत्तरशक्ति)। एटा के कोतवाली देहात क्षेत्र के गांव चमकरी में सोमवार की रात में एक छात्रा ने फंदा लगाकर जान दे दी। छात्रा लगभग 8 माह पूर्व ही अपनी ननिहाल से लौटकर घर आई थी। छात्रा ने एक सुसाइड नोट भी लिखकर छोड़ा है। इसमें लिखा है कि मामा मेरे चाचा से कुछ मत कहना, सार्थक (चचेरे भाई) की जिंदगी बर्बाद हो जाएगी। गांव चमकरी निवासी रवि पाठक ने बताया की भतीजी आकांक्षा (19) बचपन से ही अपनी ननिहाल जिला फतेहपुर में रहती थी। सोमवार की देर रात अपने घर चमकरी में कमरे के अंदर दुपट्टा से फंदा लगा लिया। जब तक हम लोग पहुंचे आकांक्षा की मौत हो चुकी थी। वहीं, ग्रामीणों का आरोप है कि छात्रा की हत्या उसके घर वालों ने ही की है। पुलिस ने शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम कराया है। सीओ सिटी अमित कुमार राय ने बताया कि लड़की बचपन से ही ननिहाल में रही है और वहीं जाने के बारे में कह रही थी। जबकि परिजन उसके आधार कार्ड व अन्य दस्तावेजों में यहां का पता दर्ज करा रहे थे। सीओ ने कहा कि हो सकता है इसी वजह से उसने यह कदम उठाया हो। फिलहाल घटना के प्रत्येक पहलू की गहनता के साथ जांच-पड़ताल की जा रही है जो भी तथ्य निकलकर सामने आएंगे, उनके आधार पर कार्रवाई की जाएगी। कमरे से छात्रा का लिखा हुआ एक सुसाइड नोट भी बरामद हुआ है। इसमें उसने लिखा है कि मामा मेरे चाचा से कुछ मत कहना, न तुम यहां भेजते न हम फंदा लगाते। अब कुछ मत करना, यही सोचना हम थे ही नहीं। मामा हम तो बर्बाद थे ही हमारे पीछे चचेरे भाई सार्थक की जिंदगी बर्बाद मत करना। हमें आज नहीं तो कल मरना ही था, फंदा लगाकर नहीं मरते तो एक्सीडेंट से मर जाते। यह हमने सोच लिया था।

पुजारी के घर से लाखों के जेवरात-नकदी चोरी

आजमगढ़ (उत्तरशक्ति)। सिधारी थाना क्षेत्र के जाफरपुर गांव में रविवार रात चोरों ने पुजारी संपूणार्नंद दुबे के घर में घुसकर करीब 20 लाख रुपये के जेवरात और नकदी पर हाथ साफ कर दिया। परिवार के सदस्यों को सुबह घटना की जानकारी हुई। पीड़ित ने सिधारी थाने में अज्ञात के खिलाफ तहरीर दी है। पुलिस घटना की छानबीन कर रही है। सिधारी थाना क्षेत्र के जाफरपुर गांव निवासी पुजारी संपूणार्नंद दुबे अपने परिवार के साथ घर में सोए थे। रविवार की रात चोर घर में घुसकर जेवरात व नकदी लेकर गायब हो गए। पीड़ित परिवार जब सुबह उठा तो कमरे में सामान बिखरा मिला। आलमारी व बॉक्स से सामान गायब था। पीड़ित ने बताया कि जेवरात व नकदी मिलाकर करीब 20 लाख का सामान चोरी हुआ है। पीड़ित ने इस संबंध में सिधारी थाने में तहरीर दी है। सिधारी थाना प्रभारी शशिचंद्र चौधरी ने बताया कि तहरीर मिली है।

पेड़ से टकराई कार ,चार की मौत

प्रयागराज (उत्तरशक्ति)। प्रयागराज के पिपरी कोतवाली के कस्बा चायल के आगे शनिवार रात करीब 12 बजे लौट रहे बरातियों की कार गुंगवा की बाग स्थित शिवरानी गेस्ट हॉउस के समीप जामुन के पेड़ से टकरा गई। हादसे में कार सवार चार लोगों की मौत हो गई, जबकि चालक गंभीर रूप घायल हो गया है। घटना की सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची पुलिस ने घायलों को कार से निकाल कर प्रयागराज के एसआरएन अस्पताल ले गई, जहां डाक्टरों ने जांच के बाद चार लोगों को मृत घोषित कर दिया। पुलिस के मुताबिक कार की रफ्तार इतनी तेज थी कि टक्कर के बाद कार के परखच्चे उड़ गए। पूरामुफ्ती निवासी लालबहादुर पटेल के बेटे बुधराम पटेल की शादी समोरह में शामिल होने के लिए शनिवार रात सल्लाहपुर चौकी अंतर्गत मानिकपुर निवासी सुनील कुमार, रवि कुमार, धूमनगंज कोतवाली के बाकराबाद निवासी चंद्रबदन, बड़के कोटवा निवासी दिलीप कुमार और बलिया निवासी एयर फोर्स कर्मी विकास कार से कस्बा चायल के आंबेडकर नगर वार्ड निवासी दौलत राम पटेल के घर आए थे। रात 12 बजे के करीब लौटने के दौरान गुंगवा की बाग स्थित शिवरानी गेस्ट हॉउस के समीप कार जामुन के पेड़ टकरा गई। हादसे के बाद चीख-पुकार मच गई। घटनास्थल पर पहुंची पुलिस ने सभी घायलों को प्रयागराज के एसआरएन अस्पताल पहुंचाया, जहां डाक्टरों ने सुनील कुमार (36) पुत्र नारायण पटेल, रवि कुमार (35) पुत्र शंभूनाथ पटेल, चंद्रबदन (42) पुत्र गुलाब और विकास (40) को मृत घोषित कर दिया।

बिजली का करंट लगने से तीन लोगों की मौत

वाराणसी (उत्तरशक्ति)। वाराणसी जिले में दर्दनाक हादसा सामने आया है। कैंट थाने के अर्दली बाजार चौकी अंतर्गत भोजूबीर सब्जी मंडी के पास एक घर में बिजली के करंट की चपेट में आने से एक- एक कर तीन लोगों की मौत हो गई। मिली जानकारी के अनुसार, प्रीति जायसवाल (28) नहाने के बाद लोहे की तार से बने हेंगर पर कपड़ा फैलाने गई थी। इस बीच वाटर पंप (टुल्लू) का तार कहीं से लोहे के हेंगर के संपर्क में आ गया। अचानक बिजली का झटका लगने से प्रीति छटपटाने लगी। यह देख पति सोनू जायसवाल (30) भी पहुंचा।

पत्नी को बचाने के चक्कर में सोनू भी करंट की चपेट में आ गया। सोनू के पिता राजेंद्र जायसवाल (65) ने भी उन्हें बचाने की कोशिश की। लेकिन वह भी करंट की चपेट में आ गए। तीनों की मौके पर ही मौत हो गई। सोनू और प्रीति की दो छोटी बेटियां शिवांगी (09) कक्षा एक में पढ़ती है, जो घटना के समय स्कूल में थी। दूसरी बेटी नैंसी (04) है। मौके पर चौकी प्रभारी पहुंचे और घटना की जानकारी ली।

पत्रकार नानबाबू चौहान के प्रयास से बेजुबान पशु का हुआ उपचार

बलरामपुर (उत्तरशक्ति)। उत्तर प्रदेश के जनपद बलरामपुर में उत्तरशक्ति हिंदी दैनिक के संवाददाता नानबाबू चौहान ने प्रशासन व क्षेत्र के नागरिकों का ध्यान आकृष्ट करते हुई एक गंभीर व अत्यंत दर्दनाक घटना की ओर दशार्या है। बलरामपुर जनपद के अंतर्गत ब्लॉक बलरामपुर के बिस्कोहर मार्ग, आबर पैगापुर चौराहा के पास की घटना है। उक्त स्थान पर एक छुट्टा सांड महीनों से गंभीर रूप से घायल अवस्था में पड़ा था। जानकारी के अनुसार, किसी निर्दयी व्यक्ति ने जानबूझकर उसके सिंग में रस्सी बांधकर पेड़ से कस दिया था। जिससे वह बेजुबान प्राणी बुरी तरह जख्मी हो गया। सिंग में रस्सी के दबाव से घाव बन गया, कीड़े पड़ गए, और बाद में कैंसर जैसी स्थिति उत्पन्न हो गई। इस गंभीर मामले को पत्रकार नान बाबू चौहान ने देखा और उन्होंने 1076, 1962 और मुख्यमंत्री हेल्पलाइन पर शिकायतें दर्ज कीं। 30 अप्रैल 2025 को एंबुलेंस आई पर रस्सी नहीं काट सकी। बाद में 1 मई को पुनः शिकायत करने पर जिला पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ. सुनील कुमार वर्मा ने टीम के साथ पहुंचकर रस्सी को काटा और प्राथमिक उपचार किया। देखा जाए तो मार्ग से तमाम जिम्मेदार नागरिकों का भी आना-जाना लगा रहता है लेकिन उक्त पशु के संबंध में विचार करना किसी ने मुनासी नहीं समझा। लेकिन एक पत्रकार की सूझबूझ से और जिला प्रशासन से शिकायत करने पर पशु विभाग की टीम ने आकर उक्त पशु का इलाज किया। इसके पूर्व भी इसी तरह से एक सांड पर किसी ने निर्दयतापूर्वक हमला किया था। वह सांड भी रोड पर कई महीने तक घायलावस्था में अपने उपचार के लिए आने जाने वाले लोगों को बहुत ध्यान से देखा था। लेकिन किसी का ध्यान उसे पर नहीं गया। उस सांड को भी नानबाबू चौहान के प्रयास से स्वस्थ किया गया। यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है कि एक बेजुबान पशु को महीनों तक तड़पता छोड़ दिया गया और संबंधित विभागों की निष्क्रियता के कारण उसकी स्थिति बद से बदतर होती चली गई। पत्रकार नानबाबू चौहान ने प्रशासन से मांग किया है कि उक्त सांड के साथ क्रूरता करने वाले व्यक्ति की तत्काल पहचान कर एफआईआर दर्ज की जाए। पशु क्रूरता अधिनियम व अन्य संबंधित धाराओं के अंतर्गत कड़ी कानूनी कार्यवाही की जाए। भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने हेतु स्थायी निगरानी

निजी स्कूलों में एनसीईआरटी पुस्तकें पढ़ाना अनिवार्य

आजमगढ़। जिलाधिकारी ने निजी स्कूलों को एनसीईआरटी पुस्तकों के उपयोग का सख्त निर्देश दिया है। उत्तर प्रदेश अभिभावक महासंघ के प्रदेश अध्यक्ष युधिष्ठिर दूबे और महासचिव गोविंद दूबे की शिकायत के बाद उन्होंने यह कदम उठाया है। नियम का उल्लंघन करने पर एक लाख रुपये जुमार्ना लगाया जाएगा। शिकायत में कहा गया था कि निजी स्कूल प्रबंधक और प्रकाशकों की मिलीभगत से महंगी निजी पुस्तकें थोपी जा रही हैं। इससे अभिभावकों पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। जिलाधिकारी रवींद्र कुमार द्वितीय ने जनपद के सभी अशासकीय सहायता प्राप्त, मान्यता प्राप्त, और निजी प्राथमिक-उच्च प्राथमिक स्कूलों के प्रबंधकों व प्रधानाध्यापकों को निर्देश दिया है। इसमें कहा है कि एनसीईआरटी पुस्तकों के अलावा निजी प्रकाशकों की पुस्तकें चलाना गैरकानूनी है। छात्रों को चिह्नित बुक सेलर से किताबें खरीदने के लिए बाध्य करने पर उत्तर प्रदेश स्ववित्तपोषित स्वतंत्र विद्यालय (शुल्क विनियम) अधिनियम, 2018 की धारा 8(10)(क) के तहत पहली बार एक लाख रुपये का जुमार्ना लगेगा। जिम्मेदारी प्रबंधक और प्रधानाध्यापक की होगी। बीएसए राजीव कुमार पाठक ने बताया कि डीएम के निर्देश पर सभी विद्यालयों में एनसीईआरटी की पुस्तकों को अनिवार्य कर दिया गया है। यदि कोई विद्यालय इस आदेश का पालन नहीं करेगा तो उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

चलती स्कूटी बनी आग का गोला, मची अफरा-तफरी

मुरादाबाद (उत्तरशक्ति)। मुरादाबाद के कांठ रोड पर चलती स्कूटी में अचानक आग लग गई। कुछ ही मिनटों में स्कूटी आग का गोला बन गई और आसपास अफरातफरी मच गई। गनीमत रही कि समय रहते स्कूटी सवार उतर गया। घटना दोपहर करीब डेढ़ बजे सिविल लाइंस थाना क्षेत्र के पुलिस अकादमी के पास हुई। गुरहट्टी निवासी नरेंद्र कुमार स्कूटी से कांठ रोड स्थित पेट्रोल पंप से पेट्रोल भरवाकर लौट रहे थे। जैसे ही वह अकादमी तिराहे पर पहुंचे तभी स्कूटी से अचानक धुआं निकलने लगा। देखते ही देखते उसमें आग लग गई। आग की लपटें उठते ही नरेंद्र जैन स्कूटी से कूद गए। राहगीरों और स्थानीय लोगों ने आग बुझाने की कोशिश की लेकिन कुछ ही देर में वह जलकर राख हो गई। सूचना मिलने पर पुलिस और फायर ब्रिगेड मौके पर पहुंची। घटना के कारण सड़क पर कुछ समय के लिए जाम जैसी स्थिति बन गई थी। पुलिस ने ट्रैफिक को नियंत्रित कर स्थिति सामान्य की। आग लगने का कारण शॉर्ट सर्किट माना जा रहा है। इससे पहले नगर निगम के गुलाबबाड़ी स्थित मटेरियल रिकवरी फैसिलिटी (एमआरएफ) सेंटर में रविवार को अचानक आग लग गई थी। सेंटर में लगी आग की लपटों ने पलभर में ही कूड़े से अलग कर रखे गए विभिन्न प्रकार के मटेरियल के ढेर को अपनी चपेट में ले लिया था। सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची दमकल की टीम ने करीब आधे घंटे में आग पर काबू पाया।

निगम के अधिकारियों के मुताबिक गुलाबबाड़ी स्थित छोटी मंडी के पास बने एमआरएफ सेंटर में आसपास के क्षेत्रों का कूड़ा इकट्ठा होता है।

दूध कारोबारी का फंदे पर लटका मिला शव

कानपुर (उत्तरशक्ति)। सेन पश्चिमपारा थानाक्षेत्र के कुमाऊपुर गांव में मंगलवार सुबह दूध कारोबारी का शव फंदे पर लटका मिला। कुमाऊपुर निवासी विनोद मिश्रा (55) दूध का कारोबार करते थे। परिवार में पत्नी रेखा और दो बेटे हैं। बड़ा बेटा आलोक एयरफोर्स और छोटा बेटा अंकित पुलिस विभाग में सिपाही है। पत्नी रेखा के मुताबिक पति घर से कुछ दूरी पर स्थित पशु बाड़े में मवेशियों को चारा डालने गए थे। काफी देर तक न लौटने पर वह बाड़े पहुंची तो पति का शव छत के कुंडे में रस्सी के सहारे लटकता मिला। पड़ोसियों की मदद से शव को नीचे उतारकर पुलिस को जानकारी दी। सेनपश्चिम पारा थाना प्रभारी कुशल पाल सिंह ने बताया कि परिजनों से पूछताछ में कारण स्पष्ट नहीं हुआ है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

पटना में ई-मेडिक्स स्मार्ट फामेर्सी के नये स्टोर का उद्घाटन

पटना। बिहार और झारखंड में तेजी से विस्तार कर रहा ई-मेडिक्स अब पटना में भी विश्वसनीय स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करा रहा है। इसी क्रम में ई-मेडिक्स स्मार्ट फामेर्सी ने सोमवार को बेली रोड स्थित बिहार फामेर्सी कॉलेज मोड़ पर अपने नये स्टोर का उद्घाटन किया। इस पहल का उद्देश्य है–किफायती और गुणवत्तापूर्ण दवाओं को आम जनता तक सुलभ बनाना। उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि राम कुमार, सह-संयोजक, सीमा जागरण मंच (आरएसएस) ने कहा, 'ई-मेडिक्स जैसी संस्थाएं स्वास्थ्य सेवा की दिशा में प्रशंसनीय कार्य कर रही हैं। समाज को समय पर प्रमाणिक दवा की उपलब्धता मिलना अत्यंत आवश्यक है।' इस अवसर पर विधायक बिरेंद्र पासवान (रोसड़ा), सेवानिवृत्त आईएएस दयानंद प्रसाद, डॉ. सचिन (डीएनबी ऑर्थो), अभिनव सोनू, उदय उज्जवल और रंजन कुमार भी उपस्थित रहे। ई-मेडिक्स गोला रोड फ्रेंचाइजी के स्वामी विवेक ने कहा, 'हमारी प्राथमिकता सेवा है। हम हर ग्राहक को समय पर उचित मूल्य पर उच्च गुणवत्ता की दवाएं देने के लिए प्रतिबद्ध हैं।'कंपनी के सीओओ और सह-संस्थापक दानिश अशरफ ने कहा, 'हम केवल दवा विक्रेता नहीं, बल्कि प्रत्येक ग्राहक के स्वास्थ्य के प्रति जिम्मेदार हैं। यह स्टोर हमारे सेवा क्षेत्र को विस्तार देगा।' इस अवसर पर वकार सिद्दीकी (जीएम), सौरभ प्रकाश (मार्केटिंग मैनेजर), तथा शशांक, विशाल और अंशु कुमार जैसे टीम सदस्य भी मौजूद रहे।

मॉकड्रिल : जब बजेगा सायरन, छा जाएगा अंधेरा

सुरेश गांधी

वाराणसी। पहलगाम हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान को करारा जवाब देने की तैयारियां तेज कर दी है. पाकिस्तान के खिलाफ सैन्य कार्रवाई शुरू करने के पहले 7 मई को देश भर में सिविल डिफेंस मॉक ड्रिल होने जा रही है. इसी कड़ी में संवोदनशीलता को देखते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संसदीय क्षेत्र वाराणसी में भी मॉक ड्रिल की जाएगी. जिलाधिकारी सत्येन्द्र कुमार ने बताया कि मॉकड्रिल सायंकाल में होगी। उन्होंने कहा कि सुरक्षा के साथ मॉकड्रिल की जाएं और लोगों के साथ तालमेल बैठाया जाए. मॉकड्रिल में 5 हजार से अधिक ट्रेनर शामिल होंगें और बतायेंगे कि किस तरह आम जनता को आपातकालीन स्थिति में सुरक्षित होना है। उन्होंने कहा कि शहर से देहात तक में सिविल डिफेंस के लोग नागरिकों को प्रशिक्षित करेंगे. इस दौरान हवाई हमले की चेतावनी देने वाला सायरन बजाने और ब्लैक आउट की मॉक ड्रिल की जाएगी। दमकल, पुलिस, चिकित्सा, फूड सप्लाई चेन, सिविल डिफेंस सभी से कोऑर्डिनेट किया गया है. साथ ही जनता से अपील की गई है कि यह केवल एक मॉक ड्रिल है, यानी तैयारियां हैं, किसी भी सूरत में डरना नहीं है. लेकिन जब भी सायरन बजे तो अपने परिवार को सुरक्षित स्थान पर ले जाएं. इसके लिए युवाओं और छात्रों को विशेष रूप से जागरूक करने की योजना है. इसमें नागरिक सुरक्षा आपदा प्रबंधन पुलिस और फायर ब्रिगेड मिलकर युद्ध जैसी स्थिति में नागरिकों को सुरक्षित करने का अभ्यास करेंगे। उन्होंने कहा कि किसी भी सार्वजनिक और भीड़भाड़ वाले स्थान पर तेज आवाज में सायरन बजने लगे, अचानक स्ट्रेचर पर घायलों को उठाकर कर्मचारी एंबुलेंस की ओर भागते दिखें, भागो-भागो, चलो जल्दी से निकलो कहते हुए आपाधापी, सीटियां अनवरत बजती रहें और कहीं किसी जगह आग लगी मिले तो आप घबराएं नहीं, यह आपकों को ट्रेंड करने के लिए किया जा रहा है। कब कहां और कैसे सायरन बजाना है, कहीं अप्रिय घटना होने या आग लगने पर नागरिकों को उसके प्रभाव से बचाते हुए कैसे और कहां सुरक्षित स्थान पर ले जाना है, हवाई हमले में कहीं किसी की मृत्यु हो जाती है तो उसे फौरन जिला प्रशासन की ओर से निर्धारित स्थान पर ले जाने, किसी भवन या अपार्टमेंट आदि में आग लगने, ऊंची इमारत के गिरने की स्थिति में राहत कार्यों का प्रशिक्षण दिया जाएगा। हमलों के समय आग लगने, नागरिक सुविधाओं को जारी रखने, बम निरोधक दस्ते का सहयोग, स्वास्थ्य सेवाएं त्वरित उपलब्ध कराने समेत अन्य जरूरी सेवाओं को मौके पर लागू करने की मॉकड्रिल होगी। ब्लैक आउट होने की स्थिति में उठाए जाने जाने वाले सभी जरूरी कदम, नागरिकों तक संदेश पहुंचाने और नागरिकों के दायित्व की जानकारी दी जाएगी।

वायुसेना से आते हैं संदेश

युद्ध के समय शहर में सिविल डिफेंस की ओर से एक कंट्रोल रूम बनाए जाने की व्यवस्था रहती है। इसमें चीफ वार्डेन ऑफिसर कमांडिंग बैठते हैं। साइमेंटिनियस ब्राड कास्टिंग सिस्टम लगाया जाता है जो वायु सेना के कंट्रोल रूप से हाट लाइन पर जुड़ता है। इसमें वायु सेना की ओर से संदेश बराबर आते रहते हैं, दुश्मन देश के लड़ाकू जहाज कहां किस तरफ से आ रहे हैं, कहां नगरीय इलाकों में हवाई हमले की आशंका है, इस तरह के संदेश कंट्रोल रूम को वायुसेना देती है। उस दौरान कंट्रोल रूप से एक साथ 35 फोन लाइन पर संदेश चलते हैं।

आकाशीय बिजली गिरने से दंपती की मौत

मऊ (उत्तरशक्ति)। मऊ जिले में मौसम के कहर से दो लोगों की जान चली गई। देर रात में आंधी- बारिश के बीच आकाशीय बिजली गिरने से दंपती की मौत हो गई। हलधरपुर थाना क्षेत्र के रतनपुरा ठैचा ग्राम पंचायत के रेता पुरवा में दंपती तरबूज की खेती की निगरानी के लिए खेत में सो रहे थे। जानकारी के अनुसार ठैचा के निवासी कांता राजभर (55) ने तरबूज की फसल उगाई है। हर दिन की तरह रात में वह अपने खेत पर अपनी पत्नी वालकेसिया देवी (53) के साथ निगरानी के लिए सोने गए थे। रात में सोते समय बिजली मड़ई पर गिरी। जिससे पति-पत्नी दोनों की झुलसकर मौत हो गई। मंगलवार की सुबह दंपति के घर न आने पर परिजन उन्हें बुलाने पहुंचे तो घटना की जानकारी हुई। इससे पहले सोमवार की शाम पांच बजे सेहबरपुर निवासी लालचंद राजभर की बिजली चपेट में आने से मौत हो गई थी।

आशीर्वाद मसाला छछ अब 200 मिली पाउच में होगा उपलब्ध

गया (उत्तरशक्ति)। पूर्वी भारत का लोकप्रिय डेयरी ब्रांड आशीर्वाद, अब बिहार में अपने फ्रेश डेयरी प्रोडक्ट्स की रेंज को और भी मजबूत करते हुए मसाला छाछ 10 रुपये के किफायती दाम पर लेकर आया है। गर्मियों की शुरूआत मे यह नई पेशकश एकदम सही समय पर आई है, जो स्वाद और ताजगी का बढ़िया मेल पेश करती है। आशीर्वाद मसाला छाछ खासतौर पर बिहारी स्वाद के लिए स्थानीय स्तर मे ही तैयार किया गया है, जिस से आपको मिले ताजगी भरा घर जैसा एहसास। छाछ मे जीरा, काली मिर्च और काले नमक जैसे मसालों का स्वादिष्ट मिश्रण किया गया है, जो न केवल अपने विशिष्ट स्वाद, बल्कि पाचन संबंधी लाभों के लिए भी पसंद किए जाते हैं। इस विस्तार के बारे में बोलते हुए, विवेक कुक्कल, वाइस प्रेसिडेंट एंड हेड, डेयरी एंड बेवरेजेस, आईटीसी लिमिटेड, आईटीसी में हमारा मकसद हमेशा से रहा है कि हम अपने उपभोक्ताओं के स्वाद और पसंद को समझते हुए उत्तम क्वालिटी वाले प्रोडक्ट्स बनाएं। आशीर्वाद मसाला छाछ पारंपरिक स्वाद का एक संपूर्ण मिश्रण है, जो इसे गर्मियों के मौसम के लिए एक आदर्श साथी बनता है। आशीर्वाद मसाला छाछ अब 200 मिली पाउच में उपलब्ध होगा, जिसकी कीमत सिर्फ 10 रुपये है। यह जल्द ही बिहार के सभी किराना और मॉडर्न ट्रेड स्टोर्स पर उपलब्ध होगा।

एयरटेल बिजनेस से उद्यमियों के लिए बीएनडी सेवा की शुरूआत की

मुंबई। एयरटेल बिजनेस ने आज 'बिजनेस नेम डिस्प्ले' (बीएनडी) सेवा के लॉन्च की घोषणा की है। यह सेवा उद्योग में अपनी तरह की पहली, नई तकनीक पर आधारित सुविधा है, जिसका उद्देश्य कंपनियों और उपभोक्ताओं के बीच होने वाले संवाद को अधिक विश्वसनीय और प्रभावी बनाना है। इस सेवा के जरिए कंपनियां, अपनी आउटगोइंग कॉल्स के दौरान ग्राहकों के मोबाइल स्क्रीन पर अपना ब्रांड नाम प्रदर्शित कर सकेंगी, जिससे ग्राहकों को भरोसेमंद बिजनेस कॉल्स और स्पैम कॉल्स के बीच आसानी से अंतर करने में मदद मिलेगी। एयरटेल ने अपने ग्राहकों को स्पैम कॉल्स से राहत दिलाने के लिए भारत का पहला स्पैम-रोधी नेटवर्क शुरू किया है।

इस पहल को देशभर में चलाए गए एक बड़े जनजागरूकता अभियान के जरिए ग्राहकों तक पहुंचाया गया, ताकि वे इस समस्या को बेहतर तरीके से समझ सकें और सतर्क रह सकें। इस पहल के चलते एक ओर जहां स्पैम कॉल्स को लेकर लोगों में जागरूकता बढ़ी और उन्होंने अनजान या स्पैम के रूप में चिन्हित कॉल्स को अनदेखा करना शुरू किया, वहीं दूसरी ओर इसका एक अनचाहा असर यह हुआ कि कई ब्रांड्स की कॉल्स भी स्पैम के तौर पर टैग हो गईं। इस वजह से ग्राहक कई बार बैंकों, फूड डिलीवरी, कूरियर सेवा या डॉक्टर की जरूरी अपॉइंटमेंट जैसी अहम कॉल्स मिस कर देते थे। ह्यबिजनेस नेम डिस्प्लेह्व इस समस्या का सीधा और सुरक्षित समाधान है। यह सेवा हर इनकमिंग कॉल में कंपनी का नाम दिखाकर ग्राहकों को स्पष्ट जानकारी देती है, जिससे वे सोच-समझकर फैसला ले सकें। इससे कंपनियां अपनी पहचान बेहतर ढंग से बना सकती हैं और ग्राहक धोखाधड़ी से सुरक्षित रहते हैं, जिससे एक भरोसेमंद और सुरक्षित संचार का माहौल बनता है।

एयरटेल बिजनेस के डायरेक्टर एवं सीईओ, शरत सिन्हा ने कहा, ह्यएयरटेल में हमारा निरंतर प्रयास एक ऐसा संचार अनुभव देने का है जो स्मार्ट, सुरक्षित और पारदर्शी हो। ह्यबिजनेस नेम डिस्प्लेह्व के जरिए हम व्यवसायों को हर कॉल के साथ विश्वास कायम करने और अपनी उपस्थिति दर्ज कराने का अवसर दे रहे हैं, वहीं ग्राहकों को यह भरोसा मिल रहा है कि उन्हें कॉल कौन कर रहा है। यह सेवा दोनों पक्षों के लिए संवाद को अधिक निजी, सुरक्षित और सहज बनाने का माध्यम है।ह्व इस समाधान का सफल परीक्षण 250 से अधिक कंपनियों के साथ किया गया, जिनमें बैंकिंग, रिटेल, फूड डिलीवरी, मोबिलिटी, क्विक कॉमर्स, कूरियर और लॉजिस्टिक्स जैसे प्रमुख क्षेत्र शामिल थे।

कार और बाइक की टक्कर में दो युवकों की मौत

बिजनौर (उत्तरशक्ति)। मोटा महादेव-भागूवाला बाईपास तिराहे पर कार और बाइक की भिड़ंत में पांच लोग घायल हो गए। बाइक सवार दो युवकों को जिला अस्पताल ले जाया गया, जहां उनकी मौत हो गई। वहीं घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। भागूवाला-मोटा महादेव बाईपास तिराहे पर मंगलवार सुबह करीब साढ़े छह बजे हरिद्वार की ओर से आ रही कार की बाइक से भिड़ंत हो गई। हादसे में बाइक सवार शिवाला कला थाना क्षेत्र के गांव उमरा निवासी वैभव (24) और प्रियम (23) गंभीर रूप से घायल हो गए। एंबुलेंस से दोनों घायलों को समीपुर अस्पताल ले जाया गया, जहां से चिकित्सकों ने जिला अस्पताल के लिए रेफर कर दिया। जिला अस्पताल पहुंचने पर वैभव और प्रियम की मौत हो गई।

भदोही की बेटी नित्या पाठक ने किया जिले का नाम रोशन

भदोही (उत्तरशक्ति)। ग्राम घमहापुर, ब्लॉक महाराजगंज, जिला संत रविदास नगर (भदोही), उत्तर प्रदेश की नित्या पाठक, पुत्री श्री विमल पाठक, ने शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल कर जिले का गौरव बढ़ाया है। नित्या ने SRM चेन्नई से बायोटेक्नोलॉजी में बी.टेक करने के पश्चात अब MBA (मार्केटिंग) में 10 CGPA प्राप्त कर शत-प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। यह सफलता उन्होंने अपनी कड़ी मेहनत, साहस, निपुणता और समर्पण के बल पर अर्जित की है। नित्या पाठक ने जीवन के अनेक उतार-चढ़ावों का सामना करते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त किया और आज वे समस्त छात्राओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गई हैं। उनकी बुद्धिमत्ता, समझदारी, संस्कारों के प्रति उनकी आस्था और सत्कर्मों में निष्ठा उन्हें विशिष्ट बनाती है। परिजनों ने इस उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि यह क्षण न केवल उनके लिए, बल्कि पूरे जिले के लिए गर्व का विषय है। उन्होंने ईश्वर भोलेनाथ और माता संतोषी से नित्या के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए कहा कि वह जीवन में सूर्य के समान प्रकाशमान रहें, चंद्रमा की तरह शीतलता बनाए रखें और आकाश की तरह निरंतर ऊँचाइयों को छुएं।

डॉ. वेदप्रकाश दुबे को ₹रवीन्द्रनाथ टैगोर गौरव राष्ट्रीय सम्मान 2025

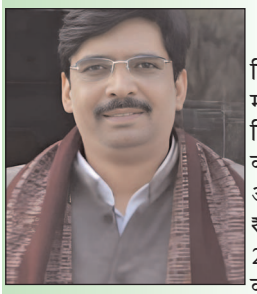

आदेश मिश्रा

मुम्बई। मुंबई के एसएनडीटी महिला विश्वविद्यालय से संबद्ध श्रीमती पी.एन. दोशी महिला महाविद्यालय के स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. वेदप्रकाश दुबे को बृजलोक साहित्य कला संस्कृति अकादमी, आगरा, उत्तरप्रदेश द्वारा ₹रवीन्द्रनाथ टैगोर गौरव राष्ट्रीय सम्मान 2025₹ से सम्मानित किया गया है। डॉ. दुबे को यह सम्मान हिन्दी साहित्य, कला, संस्कृति, शिक्षा, शोध, चिकित्सा, खेल, आयुर्वेद, योग, समाजसेवा, राजनीति आदि क्षेत्रों में निरन्तर योगदान के लिए प्रदान किया गया है।

पाकिस्तानी पति, हिंदुस्तानी पत्नी : बॉर्डर पर दिखा जुदाई का दर्द

दिल पर पत्थर रख सना ने सरहद पार भेजे जिगर के टुकड़े

मेरठ। उत्तर प्रदेश के मेरठ की सना अटारी सीमा पर अपने दो मासूम बच्चों को पाकिस्तानी पति को सौंपने के बाद फूट-फूट कर रोयी। पाकिस्तान के कराची निवासी एक डॉक्टर से विवाह करने वाली सना को बच्चों से अटारी सीमा पर जुदा होना पड़ा। सना के साथ गये उसके परिजनों ने मंगलवार को बताया कि पाकिस्तानी नागरिकता धारक बच्चों को सीमा पार भेजने के बाद सना फूट-फूट कर रो पड़ी। अधिकारियों के अनुसार जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में पिछले माह 22 अप्रैल को आतंकी हमले में 26 नागरिकों के मारे जाने के बाद पाकिस्तानी नागरिकों को स्वदेश भेजने के केंद्र सरकार के फैसले के मद्देनजर उत्तर प्रदेश में उन्हें वापस भेजने की प्रक्रिया तभी शुरू हो गयी थी। सरकारी निर्देश के अनुसार जो पाक नागरिक जिले में दीर्घकालिक वीजा (एलटीवी) पर रह रहे हैं वही नागरिक यहां रह सकेंगे, लेकिन अल्पकालिक वीजा पर आये पाकिस्तानी नागरिकों को वापस भेजा गया। परिजनों ने बताया कि भारत सरकार द्वारा पाकिस्तानी नागरिकों के वीजा रद्द किए जाने के बाद सोमवार को सना ने अपने तीन वर्षीय बेटे और एक वर्षीय बेटी को अटारी सीमा पर पति को सौंपा। बच्चों के पास पाकिस्तानी पासपोर्ट है, जबकि सना अब भी भारतीय नागरिक हैं। सना ने कहा, सरकार से सवाल है कि मां और बच्चों को क्यों अलग किया जा रहा है। मेरा क्या दोष है। सना की शादी 2020 में कराची निवासी बिलाल से हुई थी। उनका कहना है कि पाकिस्तान की नागरिकता प्राप्त करने में अभी चार वर्ष और लगेंगे। वहीं इस बारे में पूछने पर थाना सरधना के प्रभारी निरीक्षक प्रताप सिंह ने पीटीआई-भाषा को बताया कि दो दिन पहले हमने सरकारी आदेश के अनुसार सना को बता दिया था कि बच्चों को वापस छोड़ आओ, जिसके बाद सना अपने बच्चो को सीमा पर कानूनी औपचारिकताएं पूर्ण कर छोड़ आई है।

झज्जर में महिला ने की आत्महत्या, पति की इस आदत की वजह से उठाया खौफनाक कदम

झज्जर । झज्जर शहर के छावनी मोहल्ले में पति-पत्नी की आपसी कहासुनी के चलते एक प्रवासी मजदूर महिला ने किराए के मकान पर फांसी का फंदा लगाकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंची। पुलिस ने मामले में मृतक महिला के शव को फांसी के फंदे से उतरकर पोस्टमार्टम के लिए झज्जर के नागरिक अस्पताल में भिजवाया। जानकारी अनुसार मृतक महिला की पहचान करीब 35 वर्षीय विनीता पत्नी उमाकांत निवासी उत्तर प्रदेश के रूप में हुई है। मृतका का पति उमाकांत मेहनत मजदूरी का काम करता है और अपने परिवार के साथ करीब 15 सालों से झज्जर शहर में किराए के मकान में रह रहा है। मृतक महिला के दो बेटे हैं, जिसमें प्रिंस 13 साल का और अंश 4 साल का है।

एसीपी अनिरुद्ध चौहान ने बताया कि पुलिस को सूचना मिली थी कि झज्जर शहर के छावनी मोहल्ले में एक महिला ने किराए के मकान में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। मौके पर पहुंचकर महिला के शव को फंदे से उतरवाकर पोस्टमार्टम के लिए नागरिक अस्पताल में भिजवाया गया है। मृतक महिला के परिवार के लोगों को सूचित कर दिया गया है। परिजन आने के बाद ही शव का पोस्टमार्टम कराया जाएगा। एसीपी ने बताया कि फिलहाल पूछताछ में सामने आया है कि मृतक महिला का पति उमाकांत शराब पीता है और सुबह इसी बात को लेकर दोनों में एक झगड़ा हुआ था। जिससे महिला ने सुसाइड कर लिया। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

विधानसभा चुनाव के 7 माह बाद एक्टिव मोड में आए दुष्यंत चौटाला, संगठन में नियुक्तियों के हुए सक्रिय

चंडीगढ़। हरियाणा विधानसभा चुनाव के लगभग सात माह के बाद जजपा एक बार फिर से एक्टिव मोड में आ गई है। जजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अजय सिंह चौटाला जहां कार्यकत्र्ताओं के बीच जा रहे हैं तो पूर्व उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला भी अब पूरी तरह से सक्रिय हो गए हैं। वे खुद फील्ड में एक्टिव हुए हैं तो संगठन में भी नए सिरे से नियुक्तियां करते हुए पदाधिकारियों को भी पूरी तरह से सक्रिय कर दिया है।

गौरतलब है कि पिछले साल हरियाणा में 5 अक्तूबर को मतदान हुआ था और 8 अक्तूबर को परिणाम आए थे। परिणामों में भाजपा के 48 विधायक चुनकर आए और तीसरी बार भाजपा ने सरकार बनाई। कांग्रेस के 37 विधायक निर्वाचित हुए तो इनैलो के 2 विधायक चुनकर आए। तीन आजाद विधायक भी बने। जजपा को एक भी सीट पर जीत नहीं मिली। इन चुनावों के बाद इस साल फरवरी-मार्च में हुए निकाय चुनाव में कुछ जगहों पर जजपा ने जरूर अपने उम्मीदवार मैदान में उतारे, लेकिन डा. अजय चौटाला, दुष्यंत चौटाला जैसे बड़े नेताओं ने चुनावों से दूरी बनाए रखी। यहां तक कि पूर्व उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला तो पिछले सात महीने में मीडिया से भी दूरी बनाए रहे। अब विधानसभा के चुनाव परिणाम को करीब 7 माह का समय हो गया है तो अब डा. अजय चौटाला व दुष्यंत चौटाला फील्ड में सक्रिय होते नजर आ रहे हैं। मंगलवार को सिरसा पहुंचे दुष्यंत चौटाला ने बरनाला रोड स्थित अपने आवास पर कार्यकताओं से मुलाकात की और आवश्यक फीडबैक भी लिया। इसके बाद संगठन का भी पुनर्गठन करते हुए मंगलवार को जजपा की ओर से 22 जिलों में अध्यक्ष तथा 7 जिलों में प्रभारी नियुक्त किए गए। आने वाले समय में संगठन में और भी नियुक्तियां की जानी हैं।

सबसे अधिक ऋण वितरण करने वाले यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के शाखा प्रबंधक सम्मानित

जौनपुर। शासन की महत्वाकांक्षी योजना मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान (सीएम.युवा) में सबसे अधिक ऋण वितरण करने वाले यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के शाखा प्रबंधक सीहीपुर अशोक कुमार, शाखा प्रबंधक भदेठी अमरेश विजयांत, शाखा प्रबंधक जमालापुर आलोक कुमार सिंह, भारतीय स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के शाखा प्रबंधक मल्हनी विनय प्रताप सिंह पटेल और शाखा प्रबंधक कृषि विकास चंदन कुमार , उत्तर प्रदेश ग्रामीण बैंक के शाखा प्रबंधक राजीव यादव और शाखा प्रबंधक शंकरगंज बबीता गौड़ को जिलाधिकारी डॉ दिनेश चंद्र एवं मुख्य विकास अधिकारी ध्रुव खाडिया द्वारा अंगवस्त्रम और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

योजना अंतर्गत उत्कृष्ट कार्य करने वाले बैंकर्स को सम्मानित करते हुए जिलाधिकारी ने कहा कि जनपद में युवाओं को रोजगार मिले इसके लिए सभी बैंकों के द्वारा अच्छा कार्य किया जा रहा है, इनके अथक प्रयास से ही जनपद को प्रथम स्थान प्राप्त है। आज जनपद में सबसे अधिक ऋण वितरण करने वाले शाखा प्रबंधको को सम्मानित किया गया है। उन्होने कहा कि आगे भी इसी प्रकार अच्छा कार्य करने वाले शाखा प्रबन्धको को सम्मानित किया जाएगा और खराब प्रगति वालों के विरुद्ध कार्यवाही की जाएगी। जिलाधिकारी ने कहा कि शासन ने मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान (सीएम-युवा) की शुरूआत की है। इस योजना के तहत युवाओं को अपना उद्यम शुरू करने के लिए शासन की ओर से सहायता की जाती है। योजना का उद्देश्य है युवाओं को न केवल उद्यमी बनाना अपितु रोजगार सृजक के रूप में भी स्थापित कराना। इसमें बैंकर्स की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस अवसर पर मुख्य राजस्व अधिकारी अजय अंबष्ट, प्रबंधक गौरव कुमार, सहायक प्रबंधक उद्योग जय प्रकाश सहित अन्य उपस्थित रहे।

10 रुपये में आशीर्वाद ने लांच किया नया फ्रेश मसाला छाछ

भागलपुर। पूर्वी भारत का लोकप्रिय डेयरी ब्रांड आशीर्वाद, अब बिहार में अपने फ्रेश डेयरी प्रोडक्ट्स की रेंज को और भी मजबूत करते हुए मसाला छाछ 10 रुपये के किफायती दाम पर लेकर आया है। गर्मियों की शुरूआत में यह नई पेशकश एकदम सही समय पर आई है, जो स्वाद और ताजगी का बढ़िया मेल पेश करती है। आशीर्वाद ने इस खास लॉन्च के साथ एक बार फिर दिखाया है कि वो अपने उपभोक्ताओं को बढ़िया क्वालिटी, किफायती दाम, भरोसा और अनोखा स्वाद देने के लिए पूरी तरह से समर्पित है।

डमीर्कूल प्रिक्ली हीट टैल्क द्वारा भारत के 35 स्थानों पर यात्रियों के लिए

पटना । क्या आप रोज सफर करते हैं? अगर आपका जवाब हाँ है तो इस चुभती-जलती गर्मी में ट्रैफिक सिग्नल पर लम्बे समय तक रुके रहने से आप परेशान तो होते ही होंगे। दिन में तपती गर्मी तो आप सहते ही हैं पर इसके साथ चिलचिलाती धूप, पसीना, शरीर की दुर्गंध और घमौरियों से होने वाली खुजली जैसी गर्मियों की दूसरी समस्याओं का भी आपको सामना करना पड़ता है। डमीर्कूल, ईमामी लिमिटेड परिवार की ओर से भारत का प्रमुख प्रिक्ली हीट पाउडर घमौरियों के लिए डमोटोलॉजिस्ट द्वारा अनुमोदित एक समाधान है और इसमें नीम और तुलसी का डबल पावर है। इस साल की गर्मियों के लिए ब्राण्ड ने पटना में एक शानदार पहल की शुरूआत की है। इस पहल के जरिये पूरे शहर के प्रमुख ट्रैफिक सिग्नल्स पर अस्थायी शेड्स लगाया गया है। इससे पैदल यात्री मतलब खरीदारी करने और आफिस जाने वाले लोग, विद्यार्थी, साइकिल, टू-व्हीलर और कार चालकों को गर्मी से राहत मिलेगी। एक महीने के लिए लगाए गए इन टेम्परारी शेड्स से लोगों को कुछ दिनों के लिए ही सही पर थोड़ी राहत मिलेगी। इन शेड्स से सूरज की सीधी रौशनी आँखों में भी नहीं पड़ती है और ड्राइवरों को और भी साफ दिखता है जिससे संभवत एक सुरक्षित ट्रैफिक परिस्थिति भी तैयार होती है। इस पहल के तहत पटना के अली नगर कॉलोनी, फुलवारी शरीफ में डमीर्कूल ओवरहेड ट्रैफिक सिग्नल शेड्स लगाए गए हैं। गर्मी के इस मौसम में भारत के कई राज्यों में 35 स्थानों पर कई चरणों में ऐसे ही पहलों की शुरूआत की गई है। इन राज्यों में शामिल हैं आन्ध्र प्रदेश, तमिल नाडु, कर्नाटक, महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, पंजाब और दिल्ली जहाँ पर गर्मियों का तापमान लगातार 35 डिग्री सेल्सियस से अधिक ही रहता है। इन पहलों के साथ गर्मियों के कारण होने वाली असुविधा और त्वचा की समस्या से तुरंत राहत प्रदान करने के लिए ब्राण्ड द्वारा सड़क पर लोगों को डमीर्कूल कूलिंग प्रिक्ली हीट टैल्क के सैंपल भी दिए जा रहे हैं। पिछले साल की भीषण गर्मी के दौरान कोलकाता (पश्चिम बंगाल) एवं कानपुर (उत्तर प्रदेश) के प्रमुख स्थानों पर इस प्रोजेक्ट की शुरूआत की गई थी।

युवक ने पोस्ट किया धमकी भरा वीडियो, पाकिस्तान के प्रति दिखाया प्रेम

बरेली। पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद भारत और पाकिस्तान में तनावपूर्ण माहौल है। इसी बीच उत्तर प्रदेश के बरेली के रहने वाले एक युवक ने फेसबुक पर धमकी भरा वीडियो शेयर किया है। ये धमकी भरा वीडियो उसने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम शेयर किया है। 35 सेकंड के इस वीडियो में युवक ने पाकिस्तान के प्रति अपना प्यार दिखाया है।

जानकारी के मुताबिक, फेसबुक पर ये 35 सेकंड का वीडियो मोहम्मद इरशाद नाम के युवक ने शेयर किया है। इसमें उसने पाकिस्तान पर एक्शन लेने की बात की है। उसने धमकी भरे लहजे में कहा, "शायद आपने दुनिया की तारीख पढ़ी नहीं। याद रखना, हम तुम्हारा मुकाबला करेंगे, तुम्हें मुकाबला करके दिखाएंगे। इससे आगे उसने कहा कि "यहां पर कोई भी मौत से नहीं डरता, अगर आपको ये गलतफहमी है कि मैं पाकिस्तान के ऊपर कोई एक्शन लेकर अपने हिंदू बेस को ऊपर लेकर जाऊंगा, तो मोदी इस गलतफहमी में ना रहना।"

इस वीडियो की सूचना पर पुलिस ने मामला दर्ज किया। दरअसल, हिंदू संगठन के कार्यकर्ता हिमांशु पटेल ने एक्स पर बरेली पुलिस, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, एडीजी बरेली रेंज, डीजीपी उत्तर प्रदेश, आईजी रेंज को टैग करते हुए शिकायत दर्ज कराई थी। शिकायत मिलने के बाद बरेली पुलिस ने तुरंत ही मामले में मुकदमा दर्ज किया और आरोपी की तलाश शुरू कर दी। पुलिस के अनुसार, आरोपी का नाम मोहम्मद इरशाद पुत्र नन्हा, जो कि वार्ड नंबर 4, थाना भोजीपुरा का निवासी है।

भक्ति पार्क सुपर किंग्स बनी एमपीएल सीजन-3 2025 की विजेता

मुंबई (उत्तर शक्ति)। रविवार को एम एम आर डी ए के रफा इंटरप्राइजेज द्वारा आयोजित महाडा प्रीमियर लीग (एमपीएल) सीजन-3 का आयोजन किया गया। इस टूर्नामेंट में मुंबई के विभिन्न हिस्सों से कुल 10 टीमों ने भाग लिया, जिनमें डे नाइट बॉक्स क्रिकेट टूर्नामेंट के रूप में लगातार तीन दिन और तीन रात तक मुकाबले चले।

प्रतियोगिता के आरंभ में भक्ति पार्क सुपर किंग्स लगातार ग्रुप मैच हार रही थी, जिससे उनकी टीम का मनोबल काफी गिर चुका था। लेकिन कहते हैं न, ₹नया सूरज नया दिन लेकर आता है₹। अगले दिन भक्ति पार्क सुपर किंग्स ने जब उठकर खेलना शुरू किया, तो उन्होंने जीत की सिलसिला जारी रखा और अंत में फाइनल तक पहुँचने में सफलता प्राप्त की। फाइनल मुकाबले में उन्होंने शानदार प्रदर्शन किया और ट्रॉफी अपने नाम कर ली। इस जीत में सभी खिलाड़ियों ने अपनी अहम भूमिका निभाई और उनकी कड़ी मेहनत और समर्पण ने आखिरकार उन्हें यह सफलता दिलाई। दो साल की कठिन मेहनत के बाद भक्ति पार्क सुपर किंग्स ने एमपीएल सीजन-3 का खिताब अपने नाम किया। टीम के प्रशंसकों ने भी इस जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और उनकी हिम्मत और समर्थन को सराहा गया। टीम के मालिक मोहिज खान और मानव मल्होत्रा ने इस सफलता पर खुशी जताते हुए अपने खिलाड़ियों का धन्यवाद किया। कप्तान फुरकान जिवारक के नेतृत्व में टीम ने शानदार प्रदर्शन किया। पुरस्कार विजेताः मैन ऑफ द मैचः सचिन इंगले, बेस्ट बल्लेबाजः प्रतीक बेस्ट गेंदबाजः फुरकान जिवारक, बेस्ट फील्डरः अरविन्द राजभर, बेस्ट कीपरः सिद्धार्थ दसारी, बेस्ट फील्ड रक्षकः पारस, बाकी सभी खिलाड़ियों ने भी अपनी पूरी मेहनत और कड़ी मेहनत से टीम को सफलता दिलाने में अपना योगदान दिया।

दुबई में मराठी भाषियों की आवाज आज भी बुलंद है : रवींद्र चव्हाण

मुंबई। व्यापार और रोजगार के लिए दुबई में रहने वाले 1.5 लाख मराठी भाषियों के लिए हाल ही में महाराष्ट्र परिषद की स्थापना की गई। यह परिषद भारतीय जन मंच (इंडियन पीपुल्स फोरम) के एक संबद्ध निकाय के रूप में कार्य करेगी, जो संयुक्त अरब अमीरात में रहने वाले भारतीय नागरिकों द्वारा स्थापित एक व्यापक संगठन है। महाराष्ट्र परिषद की आधारशिला रविवार 4 मई को दुबई में भारतीय जनता पार्टी के महाराष्ट्र राज्य कार्यकारी अध्यक्ष रवींद्र चव्हाण की उपस्थिति में रखी गई।

उद्घाटन समारोह में बोलते हुए रवींद्र चव्हाण ने कहा कि महाराष्ट्र परिषद की 'महा हेल्पलाइन' और 'संयुक्त महाराष्ट्र मंच' जैसी बहुत महत्वपूर्ण पहल दुबई में मराठी लोगों की आवाज को और बुलंद करेगी और उन्हें अपनी समस्याओं को हल करने के लिए और अधिक ताकत देगी। साथ ही, महाराष्ट्र सरकार और आईपीएफ के बीच समन्वय बढ़ेगा। संयुक्त अरब अमीरात में किसी कारणवश परेशानी में फंसे मराठी लोगों को उनकी मातृभाषा में सहायता प्रदान करने के लिए 'महा हेल्पलाइन' सेवा, 050 365 HELP" 24 घंटे उपलब्ध कराई गई है। इसके माध्यम से सरकारी एवं कानूनी सहायता के लिए विशेषज्ञ मार्गदर्शन उपलब्ध होगा। साथ ही, 'संयुक्त महाराष्ट्र' मंच के माध्यम से यूएई के सामाजिक क्षेत्र में काम करने वाले 40 संगठन एक छत के नीचे आए हैं, जिससे महाराष्ट्र की एकता का संदेश यूएई में दूर-दूर तक पहुंचने में मदद मिलेगी, ऐसा रविंद्र चव्हाण ने कहा। रवींद्र चव्हाण ने आश्वासन दिया कि भाजपा संयुक्त अरब अमीरात में रह रहे भारतीयों की वर्तमान स्थिति, समस्याओं और मुद्दों को समझकर उनके समाधान के लिए हर संभव सहयोग प्रदान करेगी। दुबई में मराठी शैली में और बड़ी धूमधाम से आयोजित इस समारोह में 'वैश्विक महाराष्ट्रीयन' हस्तियों को सम्मानित किया गया, जिन्होंने संयुक्त अरब अमीरात में व्यापार और सामाजिक क्षेत्रों में अपनी उपलब्धियों के माध्यम से महाराष्ट्र को प्रसिद्ध किया है। भारतीय जन मंच (आईपीएफ) की स्थापना 2013 में यूएई में की गई थी। आईपीएफ यूएई में भारतीय प्रवासियों का समर्थन करने वाले सबसे बड़े सामाजिक-सांस्कृतिक संगठनों में से एक है। आईपीएफ यूएई 23 खंडों के माध्यम से काम करता है - जिसमें अध्याय, 12 राज्य परिषदें, एक व्यापार परिषद और युवाओं के लिए एक विशेष आईपीएफ युवा परिषद और महिलाओं के लिए आईपीएफ महिला परिषद शामिल हैं। आईपीएफ यूएई के 10,000 से अधिक सक्रिय समर्थक हैं और आईपीएफ यूएई ने यूएई में कुछ सबसे बड़े कार्यक्रमों जैसे 'मरहबा मोदी 2015' और 'अहलान मोदी 2024' के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

राहुल तुलपुले के नेतृत्व में आयोजित सम्मेलन में कोंकण स्नातक निर्वाचन क्षेत्र के विधायक निरंजन दावखरे, यूएई में भारतीय राजदूत सतीश कुमार सिवन, आईपीएफ यूएई प्रमुख श्री जितेंद्र वैद्य और सैकड़ों भारतीय, विशेष रूप से मराठी भाषी शामिल हुए। संयुक्त अरब अमीरात की अपनी यात्रा के दौरान, रवींद्र चव्हाण ने भारतीय दूतावास में भारत के महावाणिज्य दूतावास, माननीय सतीश कुमार सिवन के साथ सद्भावना बैठक और चर्चा की। भारत-यूएई व्यापार में महाराष्ट्र की भूमिका, आदरणीय देवेंद्रजी के नेतृत्व में महाराष्ट्र की औद्योगिक प्रगति तथा दुबई के व्यापारियों के लिए महाराष्ट्र में निवेश के अवसर सहित विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई। भाजपा के कार्यकारी अध्यक्ष रवींद्र चव्हाण ने बताया कि इसके अलावा दुबई में दुबई बिजनेस कम्युनिटी और दुबई महाराष्ट्र मंडल के सदस्यों के साथ एक महत्वपूर्ण बैठक हुई। कृतार्थ राजा, सागर देसाई, सबीना खोत, दिलावर दलवई, प्रिया जाधव, प्रसाद दातार, सचिन जोशी, अमोल वैद्य, के.जी. नारकर, राकेश पाटिल, शिरीष पटवर्धन, विजेंद्र सुर्वे, राहुल तुलपुले, रवि चिटनीस, सुहास रेगे, रोहित अगले, आईपीएफ के राहुल तुलपुले और भाजपा विधायक निरंजन डावखरे सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित थे।

इस बैठक में महाराष्ट्र के औद्योगिक, आर्थिक और सामाजिक विकास से संबंधित कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा की गई। रवींद्र चव्हाण ने यह भी बताया कि महाराष्ट्र की सांस्कृतिक परंपराओं से संबंधित कई सकारात्मक मुद्दों पर विचारों का आदान-प्रदान हुआ। रवींद्र चव्हाण ने अपनी यात्रा के दौरान बड़े उत्साह के साथ बीएपीएस हिंदू मंदिर का दौरा किया और शाम को मंदिर में आयोजित गंगा आरती में भाग लिया। इस अवसर पर बीएपीएस हिंदू मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री. मंदिर की ओर से अशोक कोटेचा ने अतिथियों का स्वागत किया। इस अवसर पर रवींद्र चव्हाण ने बीएपीएस हिंदू मंदिर ट्रस्ट के पदाधिकारियों के साथ हिंदू संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। रवींद्र चव्हाण ने कहा कि भारत और यूएई की मैत्री दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक और आर्थिक संबंधों का सुंदर संगम है और इसमें महाराष्ट्र की विशेष भूमिका है।

जबरन खिलाया गोमांस, गैंगरेप, धर्म परिवर्तन का दबाव

मुरादाबाद। उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद से एक दिल दहला देने वाला मामला सामने आया है। यहां पर एक मुस्लिम युवक ने झूठ बोलकर युवती से शादी रचाई। इसके बाद उसने युवती पर धर्म परिवर्तन का दबाव बनाया। उसे जबरन गो मांस खिलाया। इतना ही नहीं युवक ने नीचता की सभी हदों को पार करते हुए अपने भाईयों से युवती के साथ सामूहिक दुष्कर्म करवाया। पीड़िता ने इसकी शिकायत दर्ज कर न्याय की गुहार लगाई है।

मिली जानकारी के अनुसार, पूरा मामला मझोला थाना क्षेत्र का है। यहां की निवासी एक महिला ने हिंदू युवा वाहिनी के पदाधिकारियों के साथ एसएसपी कार्यालय पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई है। उसने शिकायत दर्ज कराते हुए बताया कि उसके साथ धोखा हुआ है। एक युवक ने झूठ बोलकर उससे शादी कर ली और फिर उसका धर्म परिवर्तन कराने की कोशिश की। उसके साथ सामूहिक दुष्कर्म भी किया गया।

पीड़ित महिला ने बताया कि ये उसकी दूसरी शादी थी। कुछ साल पहले उसके पति की मौत हो चुकी है। उसके दो बेटे भी हैं। 2022 में उसकी मुलाकात एक युवक से हुई। उसने अपना नाम राज ठाकुर बताया। राज ठाकुर से महिला की दोस्ती हो गई, उसने शादी का प्रस्ताव रखा। पीड़िता ने बताया कि बच्चे के बारे में सोचकर उसने शादी करने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। दोनों की शादी हो गई और किराए के मकान में रहने लगे। काफी दबाव बनाने के बाद युवक उसे अपने गांव लेकर गया। यहां पर जाकर महिला को उसकी सच्चाई पता चली।

पीड़िता ने बताया कि युवक गांव भोजपुर के पीपलसाना का रहने वाला है। वह जब युवक के साथ वहां गई तो पता चला कि युवक मुस्लिम है और उसका नाम इकरार है। उसने खुद को हिंदू बताकर धोखे से शादी की। उसने बताया कि इसके बाद आरोपी युवक और उसके परिजन उसे जबरन मांस खिलाते थे और धर्म परिवर्तन का दबाव बनाने लगे। आरोपी के भाइयों ने उसके साथ दुष्कर्म किया। बच्चों के सिर पर तमंचा तान दिया। महिला की शिकायत के बाद एसएसपी ने मझोला पुलिस को जांच कर कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं।

मॉस्को पर यूक्रेनी ड्रोन की बारिश! रूस के 12 क्षेत्रों में तबाही, 4 एयरपोर्ट बंद

रूस। रूस की सेना ने देश के लगभग 12 क्षेत्रों को निशाना बनाकर दागे गए यूक्रेन के 100 से अधिक ड्रोन को नष्ट कर दिया। इसके कारण मॉस्को के आसपास के सभी चार हवाई अड्डों पर उड़ानें अस्थायी रूप से निलंबित कर दी गई हैं। रूसी रक्षा मंत्रालय ने मंगलवार को यह जानकारी दी। रूस की नागरिक उड्डयन एजेंसी ह्यरोसावियात्सिया' और रक्षा मंत्रालय के अनुसार यूक्रेन की सीमा से लगे इलाकों और रूस के अंदरूनी इलाकों में ड्रोन हमले के कारण नौ अन्य क्षेत्रीय रूसी हवाई अड्डों ने भी अस्थायी रूप से काम करना बंद कर दिया है। यह लगातार दूसरी रात थी जब मॉस्को क्षेत्र को निशाना बनाया गया। कुर्स्क क्षेत्र के गवर्नर अलेक्जेंडर खिन्श्तेन के अनुसार ड्रोन हमले के कारण क्षेत्र में दो लोग घायल हुए हैं और वोरोनिश क्षेत्र में कुछ नुकसान की सूचना मिली है। रूस की इन रिपोर्ट की स्वतंत्र रूप से पुष्टि नहीं की जा सकी। ड्रोन हमला ऐसे वक्त हुआ है जब द्वितीय विश्व युद्ध में विजय दिवस के अवसर पर मॉस्को में कई समारोह आयोजित किए जाएंगे तथा राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने यूक्रेन के खिलाफ तीन साल से अधिक समय से जारी युद्ध में दो दिन पहले एकतरफा 72 घंटे के युद्ध विराम की घोषणा की है।

TSMH
त्रिभुवन सिंह मेमोरियल हॉस्पिटल

डा0 जयेश सिंह
एम.बी.बी.एस. एम.डी.
पीडियाट्रिक्स
डी.एम. नियोनेटोलॉजी
(Fernandez Hospital, Hyderabad)
DASSI (KEM Pune)
ONTOP (AIIMS New Delhi)

डा0 स्पृहा सिंह
M.B.B.S., MD (Pt. JNM Raipur)
CCEBDM (Diabetes)
जनरल फिजिशियन एवं मधुरोग
विशेषज्ञ पूर्व चिकित्सक आपोलो
हॉस्पिटल, हैदराबाद

वयस्कों में हार्ट, किडनी, शुगर, पेट रोग लकवा
पैरालाइसिस, निमोनिया, लीवर,
डेंगू, मलेरिया, टाईफाइड, अस्थमा/दमा, हाईब्लड प्रेशर
मलेरिया, डायलसिस, सिजेरियन डिलिवरी, नर्सों में शून्यपन
मस्तिष्क ज्वर, पीलिया, हेपेटाईटिस बी.,
ल्यूकोरिया, खूनी पेचिस, सर दर्द, माइग्रेन, यूरिन इन्फेक्शन
स्वास व फेफड़ा रोग व अन्य सभी रोगों का इलाज किया
जाता है।

आयुष्मान कार्ड द्वारा नवजात शिशु, बच्चों एवं व्यस्को का निःशुल्क इलाज।
पूर्वांचल के एक मात्र सुपरस्पेसिलिस्ट नवजात शिशु रोग विशेषज्ञ
पता- दिवानी कचहरी, अम्बेडकर तिराहा, जौनपुर | 05452-356274, 7992031213, 9026551423 | YouTube @TribhuvanSinghMemorialHospital